Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 23

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

28 शव्वाल 1442 हिज्री कमरी 10 इहसान 1400 हिज्री शम्सी 10 जून 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

फ़ज्र की नमाज़ का महत्तव

(1318) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को नजाशी रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ौत होने की ख़बरदी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आगे बढ़े और उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे सफ़ें बांधीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चार तक्बीरें कहीं।

(1327) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हब्शियों के बादशाह नजाशी रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ौत होने की ख़बर हमें उसी दिन दी जिस दिन कि वह फ़ौत हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अपने भाई के लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत माँगो।

ज़हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीऊल्लाह शाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : नजाशी का जनाज़ा दरहक़ीक़त उस बसीरत की वजह से पढ़ा गया था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वह्यी इलाही से हुई थी कि वह अपने ईमान में सादिक़ और मुख़लिस थे। अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी वफ़ात की ख़बर दीए जाने का यही मंशा मालूम होता है जिस की तसदीक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कार्य से साबित है। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनका जनाज़ा पढ़ा और यह एक ख़ास सुलूक है जो मंशा-ए-इलाही से जारी हुआ।

सही बुख़ारी, भाग 2 किताब अल् जनायज़,)

(प्रकाशन 2006 क़ादियान

वास्तविकता यह है कि हक़ ख़ुदा तआला का ही है कि वह बंदों पर इमतिहान डाले मेरे निकट जो आँसू दुनिया के दुख में गिराए जाते हैं वे आग हैं जो बहाने वाले को ही जला देते हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा तआला और बंदा का सम्पर्क

एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि"दो दोस्तों में दोस्ती उसी रूप में निभ सकती है कि कभी वह उसकी मान ले और कभी यह उसकी। यदि एक सदा अपनी ही मनवाने पर तत्पर हो जाए,तो मामला बिगड़ जाता है। यही अवस्था ख़ुदा और बंदा के सम्पर्क की होनी चाहिए। कभी अल्लाह तआला उसकी सुन ले और इस पर फ़ज़ल के दरवाज़े खोल दे और कभी बंदा उसके फैसला पर राज़ी हो जाए। वास्तविकता यह है कि हक़ ख़ुदा तआला का ही है कि वह बंदों पर इमतिहान डाले और यह इमतिहान उसकी तरफ़ से इन्सान के लाभों के लिए होते हैं। उस का क़ानून-ए-क़ुदरत ऐसे ही घटित हुआ है कि इमतिहान के बाद जो अच्छे निकलें उन्हें अपने फ़ज़लों का वारिस बनाता है।"

सांसारिक मामलों में लीन होना आख़िरत की हानि का कारण होता है।

एक नौजवान व्यक्ति ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की सेवा में हाज़िर हो कर सांसारिक मुसीबतों की कहानी शुरू की और अपने तरह तरह के दुख वर्णन किए। हज़रत मसीह मौऊद ने बहुत समझाया और फ़रमाया कि:"सम्पूर्ण रूप से इन मामलों में लीन होना आख़िरत की हानि का कारण होता है। इस क़दर रोना धोना मोमिन को नहीं चाहिए।"आख़िर वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। जिस पर आपने सख़्त नाराज़गी और ना पसंदीदगी का इज़हार फ़र्मा कर कहा कि "बस करो मैं ऐसे रोने को जहन्नुम का कारण जानता हूँ। मेरे निकट जो आँसू दुनिया के दुख में गिराए जाते हैं वे आग हैं जो बहाने वाले को ही जला देते हैं। मेरा दिल सख़्त हो जाता है ऐसे व्यक्ति के हाल को देखकर जो ऐसी वस्तु की तड़प में है।"

तवक्कुल के मिसाल की अवस्था

एक दिन मज्लिस मसीह मौऊद में तवक्कुल की बात चल पड़ी, जिस पर आपने फ़रमाया मैं अपने दिल की अजीब अवस्था पाता हूँ जैसे सख़्त बेचैनी होती और गर्मी अपनी पूर्णता को पहुंच जाती है, लोग विश्वास से आशा करते हैं कि अब बारिश होगी। ऐसा ही जब अपनी संदूकची को ख़ाली देखता हूँ तो मुझे ख़ुदा के फ़ज़ल पर पूर्ण विश्वास होता है कि अब यह भरेगी और ऐसा ही होता है।" और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर फ़रमाया कि

"जब मेरा सन्दूक ख़ाला होता है जो आन्नद तथा मज़ा ख़ुदा तआला पर तवक्कुल का

शेष पृष्ठ 12 पर

बुद्धिमान् सदैव रहने वाली जन्नतों के वारिस होंगे

और उनके माँ बाप और पत्नियाँ और औलादें जो नेक होंगे वे भी जन्नत में उनके साथ रहेंगे इस शर्त के साथ कि वे निजात पाने वाले हों। इस असल और सदाक़त को केवल क़ुरआन-ए-करीम ने ही वर्णन किया है, दुनिया की और किसी किताब ने इस मसला को नहीं लिया

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूर: राद आयत 2424 جَنّٰتُ عَدۡنٍ يَّدۡخُلُوۡنَهَا وَمَنۡ صَلَحَ مِنۡ اٰبَآئِهِمۡ وَاَزۡوَاجِهِمۡ وَذُرِّيّٰتِهِمۡ وَالۡمَلٰٓئِكَةُ يَدۡخُلُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ كُلِّ بَابٍ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में बताया गया है कि عُقۡبَى الدَّار से मुराद वह जन्नतें हैं कि जो हमेशा रहने वाली हैं या यह मुराद है कि बुद्धिमान् सदैव रहने वाली जन्नतों के वारिस होंगे। وَمَنۡ صَلَحَ مِنۡ اٰبَآئِهِمۡ और उनके माँ बाप और पत्नियाँ और औलादें जो नेक होंगे वे भी उनके साथ जन्नतों में दाख़िल होंगे। इस आयत में एक महान असलीयत और सदाक़त का इज़हार किया है। इस असल और सदाक़त को केवल क़ुरआन-ए-करीम ने ही वर्णन किया है। दुनिया की और किसी किताब ने इस मसला को नहीं लिया। दुनिया में कोई व्यक्ति कोई ऐसी नेकी और बुराई नहीं करता जिसमें दूसरे लोग किसी न किसी रंग में शामिल न हों। व्यपारी के व्यापर की कामयाबी, खेती बाड़ी करने वाले की कृषि की कामयाबी सैंकड़ों हज़ारों दूसरे लोगों के जानबूझ कर या अनजाने में किए जाने वाले सहयोग से जुड़े हैं। यही कारण है कि शरीयत इस्लामिया ने ज़कात निर्धारित की है और इस तरह दूसरे लोगों को हक़ दिलाया है। यही हाल दूसरे कर्यों का है। उदाहरणत: विचार करो एक व्यक्ति तब्लीग़ के लिए जाता है तो उस तब्लीग़ में उस की पत्नी का हिस्सा भी है क्योंकि वह उसकी अनुपस्थिति में भी उसके घर और उसके बाल बच्चो का इंतिज़ाम करती है। उनका

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-15)

भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ जलसा सालाना जर्मनी 2015

रशियन दल की मुलाक़ात, करोशीन दल के साथ मुलाक़ात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

5 जून 2015 ई शुक्रवार के दिन

भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ जलसा सालाना जर्मनी 2015

हुज़ूर अनवर स्टेज पर तशरीफ़ ले आए और समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद व ताआव्वुज़ और तसमीया के बाद फ़रमाया :

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना कल से शुरू हो रहा है और आप में से अधिकतर जो यहां बैठे हुए हैं शायद दूसरे भी हो आप वह लोग हैं जिन्होंने अपने आपको जलसा के मेहमानों की सेवा के लिए किसी न किसी रंग में प्रस्तुत किया है। अत: यह आप लोगों के लिए बड़ा सम्मान है। बहुत से ऐसे हैं जो कई वर्षों से डयूटियां दे रहे हैं। और निश्चित रूप में आपके तजुर्बा में आया होगा कि डयूटियां आपको अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दिल्ली संतुष्टि का कारण बनाती हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा बेनफ़्स हो कर करना आपके दिल को सुकून प्रदान करता है और यही चीज़ है जो यह प्रकट करती है कि अल्लाह तआला को आपकी यह अदा और यह सेवा करना पसंद है। और निश्चित रूप से अल्लाह तआला को जो चीज़ पसंद हो उस का अज्र भी ख़ुदा तआला देता है। तो अल्लाह तआला आप सबको उत्तम रूप में सेवा की तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाए और इस का प्रतिफल भी दे।

पिछली वर्ष कुछ कमियां कमज़ोरियाँ इंतिज़ामात में रह गई थीं जिनमें से एक soundsystem था। इस दफ़ा बेशुमार छोटे लाऊड स्पीकर लगे हुए हैं। मुझे आशा है कि जिस हद तक उनकी अक़ल और प्रयास ने काम किया उन्होंने बेहतर करने का प्रयास किया होगा। कुछ लोग मैं ने लंदन से चैक करने के लिए भिजवाए थे। इस दृष्टि से चैक करने के लिए कि उनका अपना तजुर्बा भी है। एक दूसरे के तजुर्बा से लाभ उठाना चाहिए। अल्लाह करे कि यह प्रबन्ध जो किया गया है वह पर्याप्त हो और बेहतर भी हो।

औरतों की ओर से अधिकतर शिकायत आती है कि वहां आवाज़ तो आ रही होती है परन्तु गूंज इतनी होती है कि शब्द सही समझ नहीं आते। विशेषता जब यहां से आवाज़ इस ओर जा रही हो। तो इस की भी अच्छी तरह चैकिंग कर लेनी चाहिए।

अपने अहंकार और सब ठीक है के चक्कर में न रहें। जो भी प्रबन्ध करने वाले हैं वह चैक करें और जिस हद तक प्रयास हो सकता है करें और जहां कमी है और इस से आगे आपकी प्रयास काम नहीं कर सकता तो बता दें कि इस हद तक हम कर सकते थे इस से आगे बढ़ना अभी सम्भव नहीं और फिर दुआ करें। अल्लाह तआला दुआओं से भी बड़े काम बेहतर कर देता है।

इसी तरह पिछले वर्ष जो मेहमान आए थे, मर्दों की तो रिपोर्ट मुझे नहीं मिली परन्तु विशेषता औरतों की ओर से रिपोर्ट मिली थी कि बच्चों और औरतों को रात तीन बजे तक अपनी बेडिंग या बिस्तर या मीटर्स का या जो भी उनको आप मयस्सर करते हैं, मुहय्या करते हैं इस का प्रबन्ध करना पड़ा और उनको शिकवा यह था कि कुछ को तो लाईन से निकाल कर विशेष favour कर के दिया जाता था और कुछ को इंकार कर दिया जाता था। तो यह भेद भाव बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मेहमान-नवाज़ी की कोई इंतिहा ही नहीं थी। आप और प्रत्येक मेहमान को उस के स्वभाव के अनुसार सारा वर्ष उसकी आवश्यकता प्रदान करने का प्रयास फ़रमाते थे। परन्तु जलसे के दिनों में आपने फ़रमाया कि विभिन्न क़ौमों के मेहमान आते हैं इस लिए जलसा में प्रत्येक से एक जैसा व्यवहार होना चाहिए। इस लिए कोई प्राथमिकता किसी को नहीं होनी चाहिए महिलाएं की ओर से लजना की ओर से अभी यह शिकायत आ गई कि हमें दो हज़ार बिस्तर दिए गए थे या मैट्रेस दिए गए थे वह समस्त प्रयोग हो चुके हैं। लोगों को दे दिए गए हैं। अत: इंतिज़ामिया को स्वयं चाहिए कि मज़ीद प्रबन्ध जितनी जल्दी हो सकता है करे। ये न हो कि रात को कुछ और लोग आ जाएँ और उनको बिस्तर प्रदान न हो। यदि उपस्थित हैं तो उन्हें प्रदान करें। नहीं हैं तो लाने का प्रयास करें। मर्दों को बेशक न दें परन्तु औरतों को बच्चों को यह ज़रूर प्रदान करने हैं और मर्दों को आज की रात यदि बिस्तरों की कोई कमी हो भी जाती है तो बर्दाश्त कर लेना चाहिए कल इन शा अल्लाह प्रबन्ध हो जाएगा।

तो बहर हाल इस वर्ष इसी तरह कुछ दूसरे इंतिज़ामात हैं जिनके बारे में मुझे बताया यही गया है कि उनमें बेहतरी लाने का प्रयास किया गया है। टायलट्स का प्रबन्ध है। बाक़ी इंतिज़ामात हैं। ख़ुदा करे कि ये सारे इंतिज़ामात प्रत्येक दृष्टि से बेहतर हों और मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी का जो हक़ है वह आप सबको अदा करने की तौफ़ीक़ मिले।

बिस्तरों की बात मैंने की है। लजना की सदर साहिबा को तो मैं ने कह दिया है कि आप और आपकी आमिला और जो भी अधिकारी हैं वे यदि आवश्यकता हुई तो अपने बिस्तर मेहमानों को दे दें। बे-शक स्वयं नीचे सोएँ। इसी तरह जो कार्यकर्ता और ओहदेदार हैं यदि मेहमानों के लिए बिस्तरों की कमी हुई तो अपने बिस्तर उनको प्रदान करने चाहिऐं। अब दुआ कर लें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले आए। जलसा के तीन दिनों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का रहने के स्थान इस बड़ी और खुल्ली इमारत के एक हिस्सा में ही है।

पौने दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जलसा गाह के पुरुषों के हाल में पधार कर नमाज़ मगरिब, ईशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे मर्दाना जलसा गाह में पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और विभिन्न प्रकार के दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रही।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी के चालिसवे जलसा सालाना का पहला दिन था। मध्याह्न एक बजकर पचपन मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान से बाहर पधारे और झंडा कुशाई के समारोह के लिए जलसा गाह के चारों हालों के मध्य एक खुले लॉन में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने लिवाए अहमदियत लहराया जब कि अमीर साहिब जर्मनी ने जर्मनी का राष्ट्रीय झंडा लहराया। लिवाए अहमदियत लहराने के समय जमाअत के लोग رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْم' की दुआ पढ़ते रहे।

M.T.A इंटरनैशनल की यहां जलसा गाह से LIVE प्रसारण सुबह से ही शुरू हो चुका था। झंडा लहराने का यह समारोह भी दुनिया-भर में लाईव प्रसारित हुआ।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधारे और ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया। जिसके साथ जलसे का उद्घाटन हुआ।

(हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा अख़बार बदर तिथि 25 जून 2015 अंक नंबर 26 में प्रकाशित हो चुका है)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा तीन बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुमा के साथ नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हमें रमज़ान के अंतिम दस दिनों में विशेषता अपनी इबादतों को संवारने और दुरूद और अस्तग़फ़ार पढ़ने, तौबा करने, दुआएं करने, अल्लाह तआला की इबादत के भी हक़ अदा करने और बंदों के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ भी बहुत ज़्यादा ध्यान देना चाहिए ताकि हम अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने वाले बन कर जहन्नुम से बचने वाले हों

हमारा हर कार्य और हमारी हर हरकत-ओ-सुकून हमारे इस दावा का चित्रण हो कि हम इस मसीह मौऊद और मह्दी माहूद को मानने वाले हैं जिसके बारे में आसमान पर फ़रिश्तों ने भी कहा था कि यह वह व्यक्ति है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करने वाला है

आज जो दुनिया में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम क़ा स्थान है यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी की वजह से है

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की वजह से है, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ होने की वजह से है हम जो हर अवसर पर यह वादा करते हैं कि मैं दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दूँगा क्या हमारा यह कर्तव्य और बहुत बड़ा कर्तव्य नहीं है कि इस जीवत करने वाले की मिशन को आगे बढ़ाते हुए, अपने वादे को पूरा करते हुए, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद-ओ-सलाम भेजते हुए इस मसीह-ओ-मह्दी के सहायक और मददगार बनें

दुरूद की वास्तविक समझ यदि किसी ने आज दुनिया को देनी है तो हम अहमदियों ने देनी है इसलिए इस रमज़ान में जहां दुरूद की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा दें वहां अपने अंदर वह पिवत्र बदलाव भी पैदा करने की कोशिश करें जो इस दुरूद की क़बूलीयत के लिए ज़रूरी हैं

अल्लाह तआला की क्षमा के दरवाज़े खुले हैं, हाँ यह ज़रूर है कि इन्सान सेहत की हालत में तौबा करे और न यह कि अंतिम सांस लेते हुए मुबारक रमज़ान में और बिलख़सूस अंतिम दस दिनों के कारण से दुरूद शरीफ़ और तौबा-ओ-अस्तग़फ़ार की एहमीयत का वर्णन और इनको बार-बार पढ़ने की तलक़ीन

पाकिस्तान में जमाअत-ए-अहमदिया के विरोध के कारण अहमदियों के लिए तथा कोरोना की बीमारी से निजात के लिए दुआ तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 अप्रैल 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आज कल हम रमज़ान के महीने में से गुज़र रहे हैं और दो दिन तक अंतिम दस दिनों में भी शामिल होने वाले हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि अल्लाह तआला रमज़ान के अंतिम दस दिनों में जहन्नुम से निजात देता है।

(कंज़ुल अम्माल, भाग 8 पृष्ठ 463 हदीस 23668 मोअस्ससा रिसाला बेरूत 1985 ई.)

अत: हमें इन दिनों में विशेषता अपनी इबादतों को संवारने और दुरूद और अस्तग़फ़ार पढ़ने, तौबा करने, दुआएं करने, अल्लाह तआला की इबादत के भी हक़ अदा करने और बंदों के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ भी बहुत ज़्यादा ध्यान देना चाहिए ताकि हम अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने वाले बन कर जहन्नुम से बचने वाले हों। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपना उस्वा और तरीक़ रमज़ान के अंतिम दस दिनों में क्या था? इबादतों के क्या मयार थे? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तो आम दिनों में भी इबादतों के वह मयार थे कि हम उनको शब्दों में वर्णन भी नहीं कर सकते लेकिन रमज़ान में उनकी क्या हालत होती थी इस बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतनी कोशिश फ़रमाते कि जो इस के अतिरिक्त कभी देखने में ना आती।

(उद्धरित सही अलबख़ारी, किताब फज़ल लैलतुल कद्र बाबुल अमल फिल अश्रलि आवाख़िर मिन रमज़ान,हदीस 2024)

अत: यह तो ज़ाहिर है कि यह हमारे तसव्वुर से बाहर है कि क्या कोशिशें होतीं और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हाभी इन कोशिशों को पूरी तरह वर्णन नहीं फ़र्मा सकें कि क्या कोशिशें थीं लेकिन इस के अतिरिक्त अल्लाह तआला का मोमिनों को हुक्म है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे लिए सबसे उत्तम उदाहरण हैं तुमने उनका अनुकरण करना है और अपनी कोशिशों के अनुसार उन्ही आला मयारों तक पहुंचने की कोशिश करनी है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे लिए क़ायम फ़रमाए। तभी अल्लाह तआला हमारी दुआओं को सुनेगा और हम इस रास्ते पर चलने वाले और इस स्थान की तरफ़ बढ़ने वाले होंगे जो एक मोमिन का रास्ते है और वह स्थान है जिसे एक मोमिन को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। अत: हमें चाहिए कि इन दिनों में विशेषता दुआओं में लग जाएं।

आजकल अहमदियों को तो विशेषता इस तरफ़ तवज्जा देने की ज़रूरत है कि कुछ देशों में विशेषता पाकिस्तान में और बाक़ी मुस्लमान देशों में भी साधारणता जो जमाअत के ख़िलाफ़ विभिन्न कोशिशें हो रही हैं और जो नफ़रत की आगीं हमारे ख़िलाफ़ भड़काई जा रही हैं या ऐसी कोशिश की जा रही है इस से अल्लाह तआला हमें बचा के रखे और दुश्मन के छल उन पर उलटाए। और इसी तरह यह भी दुआ करनी चाहिए कि यह वबा जो अब फैली हुई है अल्लाह तआला इस से भी हमें महफ़ूज़ रखे।

यह हमारी ख़ुशक़िसमती है कि हमें अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और फिर इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के द्वारा दुआओं की तरफ़ न केवल ध्यान दिलाया बल्कि उनके मक़बूल होने के तरीक़े भी सिखाए। अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजना भी क़ुबूलियत-ए-दुआ के लिए बहुत ज़रूरी है अन्यथा वे दुआएं ज़मीन-ओ-आसमान के मध्य लटक जाती हैं।

(जामे तिर्मिज़ी अबवाबुल वितर बाब मा जाअ फज़लिस्सलात अलन्नब्यिया हदीस 486)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने मुझ पर दुरूद भेजना छोड़ दिया वह जन्नत की राह खो बैठा।

(सुंन इब्ने माजा, किताब इक़ामतिस्सलात, बाब अस्सलातो अलन्नबिय्ये हदीस 908)

इसी तरह एक यह भी हदीस है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझ पर दुरूद भेजा करो। तुम्हारा दुरूद भेजना स्वयं तुम्हारी पाकीज़गी और तरक़्क़ी का मार्ग है।

(कन्जुल अम्माल,भाग प्रथम, पृष्ठ 249 किबाबुल अज़कार किस्मुल अव्वल अल्बाबुस्सादिस फिस्सलात अलैहि व अला आलेहि अस्सलात वस्सलाम रिवायत नम्बर दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

फिर यह भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो व्यक्ति मुझ पर दिल्ली ख़ुलूस से दुरूद भेजेगा उस पर अल्लाह तआला दस बार दुरूद भेजेगा और उसे दस दर्जात की बुलंदी बख़्शेगा और उसकी दस नेकियां लिखेगा।

(किताब सुनन कबीर निसाई, भाग 6 पृष्ठ 21-22, किबात अमलुय यौम वल्लयलत , सवाबस्सलात अलन्नबिय्ये रिवायत नम्बर 9892 दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 1991 ई.)

अत: इन रिवायते से दुरूद शरीफ़ की एहमीयत वाज़िह हो जाती है और हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम के मानने वाले हैं, हम जो इस बात के दावेदार हैं कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान-ओ-मर्तबा की समझ हासिल की है वह इस के बिना संभव नहीं थी, हमारा कर्तव्य बनता है कि दुरूद शरीफ़ की एहमीयत को समझें और ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद पढ़ने की कोशिश करें। केवल इसलिए नहीं कि अल्लाह तआला हमारी दुआओं को सुने बल्कि इसलिए कि मुस्तक़िल पाकीज़गी हमारी ज़िंदगियों का हिस्सा बन जाए। इस दुरूद के द्वारा हम अल्लाह तआला का क़ुरब पाने वाले बन जाएं। हम इस दुरूद के द्वारा अपनी ज़िंदगियों को सदैव पाकीज़ा करने वाले बन जाएं। हम दीनी और रुहानी तरक़्क़ी हासिल करने वाले बन जाएं। केवल हमारा दावा या मुँह की बातें न हों कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ को माना है बल्कि हमारा हर कार्य और हमारी हर हरकत-ओ-सुकून हमारे इस दावा की अक्कासी करने वाली हो कि हम इस मसीह मौऊद और मह्दी माहूद को मानने वाले हैं जिसके बारे में आसमान पर फ़रिश्तों ने भी कहा था कि यह वह व्यक्ति है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करने वाला है।

(उद्धरित बराहीन अहमदिया हिस्सा 4, रुहानी खाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 598 हाशिया दर हाशिया नंबर 3)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने इस इल्हाम का वर्णन फ़रमाते हुए जिसके शब्दों ये हैं कि صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ سَیِّدِ وُلْدِ اٰدَمَ وَخَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ। और दुरूद भेज मुहम्मद और ऑले मुहम्मद पर जो सरदार है आदम के बेटों का और खातमुल अम्बिया है सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, फ़रमाया कि यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि यह सब मुरातिब और विस्तार और उपकार उस के कारण से हैं और उसी से मुहब्बत करने का यह बदला है फ़रमाया: सुब्हान-अल्लाह इस सरवर इकायनात के हज़रत-ए-अहदीयत में क्या आला मरातिब हैं, इस सरवर इकायनात के हज़रत-ए-अहदीयत में क्या ही आला मुरातिब हैं और किस किस्म का क़ुरब है कि उस का महबूब ख़ुदा का महबूब बन जाता है और उसका ख़ादिम एक दुनिया का मख़दूम बन जाता है। अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का हक़ अदा करने वाला अल्लाह तआला के पास वह स्थान हासिल करता है कि एक दुनिया उस के हाथ पर जमा हो कर ग़ुलामी का ऐलान करती है। अत: आज जो दुनिया में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का साहब अर्थात मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम का स्थान है यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी की वजह से है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की वजह से है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ होने की वजह से है। इस मुहब्बत ही की वजह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आने वाला वह उम्मती नबी क़रार दिया है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के काम को फैलाने के लिए भेजा गया है। आगे चलाने के लिए भेजा गया है। इस्लाम की इशाअत के लिए भेजा गया है। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस स्थान पर मुझे याद आया कि एक रात इस विनीत ने इस कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा कि दिल-ओ-जान इस से सुगन्धित हो गया। उस रात ख़ाब में देखा कि आब-ए-ज़लाल की शक्ल पर अर्थात एक मीठे और साफ़ पानी की सूरत में भरी हुईं नूर की मशकें फ़रिश्ते इस विनीत के मकान पर लिए आते हैं और एक ने उनमें से कहा कि ये वही बरकात हैं जो तू ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ भेजी थीं और ऐसा ही अजीब एक और क़िस्सा याद आया कि एक मर्तबा इल्हाम हुआ जिसके अर्थ यह थे कि مَلَاِ اعلیٰ के लोग झगड़े में हैं अर्थात ख़ुदा की इच्छा दीन को पुन: जीवित के लिए जोश में है लेकिन अभी तक مَلَاِ اعلیٰ पर जीवित करने वाले व्यक्ति का ताय्युन ज़ाहिर नहीं हुआ इसलिए वे मतभेदों में है। इस अस्ना में ख़ाब में देखा कि लोग एक जीवित करने वाले को तलाश करते फिरते हैं और एक व्यक्ति इस विनीत के सामने आया और इशारा से उसने कहा। هٰذَا رَجُلٌ یُّحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰہِ। अर्थात यह वह आदमी है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता है और इस कथन से यह अर्थ था कि इस ओहदा की सबसे प्रथम तथा महत्वपूर्ण शर्त की अर्थात जीवित करने वाले की या धर्म के पुन: जीवित करने वाले की जो सबसे बड़ी शर्त है वह मुहब्बत-ए-रसूल है। अत: वह इस व्यक्ति में प्रमाणित है।

(उद्धरित बराहीन अहमदिया भाग 4, रुहानी पृष्ठ 597-598 हाशिया दर हाशिया नंबर 3)

अत: हम उस मसीह-ओ-मह्दी के मानने वाले हैं जिसे अल्लाह तआला ने दीन के पुनरुत्थान लिए भेजा है। इस्लाम को जीवित करने का महत्वपूर्ण काम देकर भेजा है। सारी दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले लाने और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में लाने के लिए भेजा है। और आप अलैहिस्सलाम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में डूब कर ही यह स्थान पाया है। हम जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आशिक़-ए-सादिक़ की जमाअत में शामिल हैं, हम जो हर अवसर पर यह वादा करते हैं कि मैं दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दूँगा क्या हमारा यह कर्तव्य और बहुत बड़ा कर्तव्य नहीं है कि इस जीवत करने वाले के मिशन को आगे बढ़ाते हुए, अपने वादे को पूरा करते हुए, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद-ओ-सलाम भेजते हुए इस मसीह-ओ-मह्दी के सहायक और मददगार बनें। दुनिया को बताएं कि तुम जिनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) अपमान करने वाला समझते हो वही सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करने वाले हैं। वही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस दुरूद-ओ-सलाम की सही समझ हासिल कर के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने वाले हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ से इस दुरूद का सही इदराक हासिल कर के आप पर दुरूद-ओ-सलाम भेजने वाले हैं। हम हैं जो रमज़ान में ना केवल अपनी ज़ाती दुआओं की तरफ़ तवज्जा देने वाले हैं बल्कि बेचैन हो कर कि किस तरह दुनिया में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम का बोल-बाला हो, किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा समस्त संसार में लेहराए, किस तरह लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आकर अपनी दुनिया-ओ-अंतिम ठिकाना संवारने वाले बनें, किस तरह लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आने को अपने आप के लिए बाइस इफ़ख़र समझें, किस तरह लोग इस्लाम के नाम के साथ जुड़ने को अपने लिए बाइस-ए-फ़ख़र समझें कि यही एक धर्म है जो दुनिया में अमन-ओ-सलामती की ज़मानत है। यही एक धर्म है जो बंदे को ख़ुदा तआला से जोड़ने की सलाहीयत रखता है। यही एक धर्म है जो दावा करता है कि आज भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यार की वजह से अल्लाह तआला उनके मानने वालों की दुआओं को सुनता है और उन्हें जवाब देता है। अत: एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है जो हम अहमदियों के कंधों पर डाली गई है। हमने ही दुनिया को अब यह बताना है। अत: हमें अब यह देखना है कि किस सच्चाई और गहराई से हम इस कर्तव्य को अदा करते हैं और फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और इनामों से फ़ैज़ उठाने वाले बनते हैं। यदि हमने वास्तव में क़ियामत तक इन इनामों और फ़ज़्लों का वारिस बनना है तो हमें अकेले अकेले भी और सब के साथ मिल कर भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद-ओ-सलाम भेजते चले जाना होगा और यदि हम इस तरह करेंगे तो फिर हम देखेंगे कि किस तरह दुश्मन के उपद्रव और उसकी चालों और इस के हमले अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से तबाह-ओ-बर्बाद हो जाते हैं, किस तरह अल्लाह तआला स्वयं ही दुश्मन से निपट लेता है। हम देखेंगे कि रुहानी तौर पर भी हम और हमारी नसलें तरक़्क़ी की मनाज़िल तै करने वाली होंगी। हम इन्फ़िरादी दुआओं की क़बूलीयत के निशान भी देखेंगे और इजतिमाई दुआओं की क़बूलीयत

के निशान भी देखेंगे और यह बात कभी झूठी नहीं हो सकती क्योंकि अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें इस बात की ज़मानत दी है कि जो दुआ अल्लाह तआला की प्रशंसा और मुझ पर दुरूद भेजते हुए करोगे वह तुम्हारी हाजतें पूरी करने वाली दुआ होगी लेकिन शर्त यह है कि दिल से और ख़ुलूस-ए-दिल से अदा किया हुआ यह दुरूद हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान-ओ-मर्तबा के ऊँचा करने की एक तड़प हो। अल्लाह तआला के हुज़ूर दिल्ली दुआ हो और यह उस सूरत में हो सकता है जब इस बात की गहराई और हिक्मत का भी इलम हो।

इस बारे में भी मुख़्तसिरन बता देता हूँ। दर्द से दुआ उस वक़्त निकलती है जब यह ज्ञात हो कि इन्सान दुआ कर क्या रहा है। केवल मुँह से शब्दों को अदा करने से न ही शब्दों की गहराई और अर्थों का इलम हो सकता है न यह दिल पर असर कर सकते हैं जो होना चाहिए। और यदि दिल पर असर न हो तो वह जोश और हरकत पैदा नहीं हो सकती। अत: दिल पर असर के लिए इन्सान को पता होना चाहिए कि दुआ कर क्या रहा है और क्यूँ-कर रहा है? लाखों करोड़ों लोग मुँह से दुरूद के शब्दों दोहरा देते हैं लेकिन यह पता नहीं कि इस का अर्थ क्या है? दुरूद पढ़ने का हमें क्या फ़ायदा है? और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस का क्या फ़ायदा है? हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दफ़ा वर्णन फ़रमाया था। इस का ख़ुलासा इस वक़्त मैं कुछ हद तक पेश कर देता हूँ।

दुरूद में اَللّٰهُمَّ صَلِّ पहले रखा गया है اَللّٰهُمَّ بَارِكْ बाद में। इसकी हिक्मत यह है कि सलात के अर्थ दुआ के हैं और اَللّٰهُمَّ صَلِّके अर्थ हुए कि हे अल्लाह! तू रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए दुआ कर। अब दुआ करने वाले दो किस्म के होते हैं एक वह जिसके पास कुछ नहीं होता वह दूसरे से मांगता है। दूसरे उस की दुआ है जिसका अपना इख़तियार है और वह स्वयं प्रदान करता है। जब हम ख़ुदा तआला के बारे में कहते हैं कि वह दुआ करता है तो उसके अर्थ हैं कि वह अपनी मख़लूक़ और पैदा की हुई चीज़ों हवा,पानी, ज़मीन, पहाड़ बाक़ी जो सब चीज़ें हैं उन सबको कहता है कि मेरे बंदे की सहायता करो। अत: اَللّٰهُمَّ صَلِّ के यह अर्थ हुए कि हे अल्लाह ! तू हर नेकी और भलाई और दुनिया, ज़मीन और आसमान की हर चीज़ की भलाई अपने रसूल के लिए चाह और उनको सम्मान-ओ-अज़मत प्रदान फ़र्मा, सम्मान-ओ-अज़मत को बढ़ा और फिर देखें कि जब अल्लाह तआला चाहेगा तो इस से बढ़कर कुछ हो ही नहीं सकता। हम तो इस बात को सौच भी नहीं कर सकते कि अल्लाह तआला क्या चाहता है। अत: यह दुआ अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश कर दी कि वह यह चाहे कि जो ज़्यादा से ज़्यादा मक़ाम हो सकता है और जो उस की नज़र में होता है या वह क्या चाहता है वह प्रदान फ़र्मा। और اَللّٰهُمَّ بَارِكْ के यह अर्थ हैं कि हे अल्लाह! तू नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए अपनी रहमतें, फ़ज़ल और इनामात जो तू ने उन पर किए हैं उन्हें इतना बढ़ा कि सारे जहान की रहमतें और बरकतें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इकट्ठी हो जाएं। अब पहले अल्लाह तआला जो चाहेगा वह प्रदान करेगा और क्या चाहा उस का भी हम अहाता नहीं कर सकते। फिर इस में इतनी बरकतें दे, उनको बढ़ाता चला जाए कि वह बिल्कुल ही हमारे तसव्वुर और सीमा से बाहर हैं। अत: जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ये सब बातें, ये दुआएं इकट्ठी होंगी और उनके क़ायम रखने के लिए हम दुआ ऐंकरें गे तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए हैं उनसे हम भी हिस्सा ले रहे होंगे। जब हम दिल में दर्द रखते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन की बुलंदी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समस्त संसार में प्रभुत्व के लिए दुआ करेंगे तो ख़ुदा तआला हमें भी इन दुआओं में हिस्सादार बना कर हमें भी दुरूद से फ़ैज़याब करेगा क्योंकि उम्मत के लिए भी साथ ही दुआ है। जो बीज हम लगाएँगे उसके फलों से हम भी फ़ैज़याब होंगे क्योंकि صَلِّ بِايك बीज की सूरत है और بَارِكْ उसके फलों की सूरत है।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद, भाग 7, पृष्ठ 77-78)

लेकिन शर्त यह है कि ख़ुलूस-ए-दिल से, ख़ुलूस-ए-नीयत से ये सब कुछ हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई तालीम पर अमल हो। हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ उल-ईबाद (ख़ुदा के कर्तव्यों का निर्वाह, और लोगों के कर्तव्यों के निर्वाह) की अदायगी की तरफ़ तवज्जा हो। हक़ीक़ी उम्मत का हम हक़ अदा करने वाले हूँ। यह नहीं कि अल्लाह तआला और उस के रसूल के नाम पर अत्याचार हूँ और साथ दुरूद पढ़ कर कहें कि हम इन बरकात से लाभ प्राप्त करने वाले भी बन जाएं जो दुरूद पढ़ने वाले को मिलते हैं। क़ानून तोड़ कर लोगों को तकलीफ़ में डाल कर फिर कहना कि हम रसूल के आशिक़ हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद और सलाम भेजने वाले हैं इसलिए हमें कुछ न कहा जाए। सड़कें बलॉक कर दें, मरीज़ हस्पताल न पहुंच सकें इसलिए कि हम अल्लाह और रसूल के नाम पर ये सब कुछ कर रहे हैं हम सही हैं। तो ये सारी बातें अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्मों की स्पष्ट ना-फ़रमानी हैं, मुकम्मल तौर पर ना-फ़रमानी हैं और तनिक भी इसकी न अल्लाह तआला ने इजाज़त दी है न रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इजाज़त दी है और न ऐसे लोगों के दुरूद फिर कोई फ़ायदा देते हैं और यह तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान-ओ-मर्तबा को बढ़ाने की बजाय उसे कम करने की एक घिनौनी कोशिश है। इस्लाम को बदनाम करने की एक कोशिश है। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर जो अत्याचार होते हैं तो फिर अल्लाह तआला की पकड़ भी सख़्त होती है। यह भी हमेशा याद रखना चाहीए।

अत: दुरूद की वास्तविक समझ यदि किसी ने आज दुनिया को देनी है तो हम अहमदियों ने देनी है। इसलिए इस रमज़ान में जहां दुरूद की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा दें वहां अपने अंदर वह पाक बदलाव भी पैदा करने की कोशिश करें जो इस दुरूद की क़बूलीयत के लिए ज़रूरी हैं और यदि यह क़बूल हो जाए तो इन्सान को इस का फ़ायदा पहुंचता है, उस की दुआएं क़बूल होती हैं, उस की रुहानी हालत बेहतर होती है, इश्क़-ए-रसूल में हक़ीक़ी तरक़्क़ी कर के इन्सान अल्लाह तआला का हक़ीक़ी प्रेम पाता है और हक़ीक़ी दुरूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंच कर फिर उनकी उम्मत की तरक़्क़ी के सामान कर रहा होता है। दुरूद शरीफ़ की एहमीयत का अनुमान इस बात से मज़ीद होता है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में भी मोमिनों को फ़रमाया है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजा करो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि :

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(अल् अहज़ाब : 57)

अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद की इतनी एहमीयत है कि अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते भी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं। अब यहां यह बात और भी साबित हो गई कि अल्लाह तआला की दुआ क्या है। अल्लाह तआला तो हर क्षण आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर्जात बुलंद करता चला जा रहा है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़मत और शान को क़ायम रखने के लिए सामान प्रदान करता चला जा रहा है और इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत की यह ज़िम्मेदारी लगाई है कि अल्लाह तआला के इस हुक्म पर हक़ीक़ी कार्य करने वाले बन कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजो। इस से तुम अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस ठहरोगे और फ़रिश्तों की दुआओं से भी फ़ैज़ हासिल करोगे क्योंकि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फ़रिश्ते दुरूद भेजेंगे तो उनका फ़ैज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हक़ीक़ी उम्मत को भी और मानने वालों को भी पहुँचेगा और जब यह फ़ैज़ हमें पहुँचेगा तो फिर शुक्रगुज़ारी का तक़ाज़ा है कि हम पहले से बढ़कर दुरूद भेजने वाले बनें और यह दुरूद और शुक्रगुज़ारी ऐसा न ख़त्म होने वाला एक सिलसिला है जो एक हक़ीक़ी मोमिन को फ़ैज़याब करता चला जाता है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत की वज़ाहत में एक जगह फ़रमाते हैं कि :

"हमारे स्य्यदुल मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही सिद्क़ों वफ़ा देखिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रत्येक किस्म की बुरी तहरीक का मुक़ाबला किया। तरह-तरह के कष्ट और दुख उठाए लेकिन पर्वा नहीं की। यही सिदक़ और वफ़ा था जिसके कारण अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया। इसी लिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया : اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا (अल् अहज़ाब : 57) ...... अल्लाह तआला और उसके समस्त फ़रिश्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं। हे ईमान वालो तुम दुरूद-ओ-सलाम भेजो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर। इस आयत से ज़ाहिर होता है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आमाल ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी प्रशंसा या विशेषताओं को सीमित करने के लिए कोई शब्द ख़ास नहीं फ़रमाया।

शब्द तो मिल सकते थे लेकिन स्वयं इस्तिमाल नहीं किए। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आमाल-ए-सालहा की तारीफ़ सीमा से परे थी।" उनको सीमित करना बहुत मुश्किल था। इससे बाहर थी। "इस किस्म की आयत किसी और नबी की शान में इस्तिमाल नहीं की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह में वह सिदक़-ओ-सफ़ा था और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आमाल ख़ुदा की निगाह में इस क़दर प्रिये थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए हुक्म दिया कि भविष्य में लोग शुक्रगुज़ारी के तौर पर भेजें।''

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 37-38)

अत: यह शुक्रगुज़ारी आख़िर हमें ही फ़ायदा पहुंचाने वाली होगी। अल्लाह तआला इस रमज़ान में भी और बाद में भी हमें हमेशा दुरूद की एहमीयत को समझते हुए दुरूद भेजने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाता चला जाए।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

दूसरी बात जिसकी तरफ़ में इस वक़्त विशेषता तवज्जा दिलानी चाहता हूँ वह है अस्तग़फ़ार। ये दुआ कि اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ۔ अर्थात मैं से अल्लाह तआला से समस्त गुनाहों की क्षमा माँगता हूँ जो मेरा रब है और उस की तरफ़ तौबा करते हुए झुकता हूँ। यह एक ऐसी दुआ है जो इंतिहाई महत्वपूर्ण है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं कि :

इस्तिग़फ़ार के वास्तविक और मूल अर्थ ये हैं कि ख़ुदा से विनती करना कि मनुष्य होने की कोई कमज़ोरी प्रकट न हो और ख़ुदा प्रकृति (फ़ितरत) को अपनी शक्ति का सहारा दे और अपने समर्थन और सहायता के घेरे के अन्दर ले ले। यह से लिया गया है जो ढांकने को कहते हैं। तो इसके ये अर्थ हैं कि ख़ुदा غَفَر शब्द अपनी शक्ति के साथ क्षमायाचक व्यक्ति की कमज़ोरी को ढांक ले। परन्तु इसके बाद सामान्य लोगों के लिए इस शब्द के अर्थ और भी विशाल किए गए और यह भी अभिप्राय लिया गया कि ख़ुदा गुनाह (पाप) को जो हो चुका है ढांक ले। किन्तु असल और वास्तविक अर्थ यही हैं कि ख़ुदा अपनी ख़ुदाई की शक्ति के साथ क्षमायाचक को जो पाप की क्षमायाचना करता है स्वाभाविक कमज़ोरी से बचाए और अपनी शक्ति से शक्ति प्रदान करे तथा अपने ज्ञान से ज्ञान प्रदान करे और अपने प्रकाश से प्रकाश दे, क्योंकि ख़ुदा मनुष्य को पैदा करके उस से अलग नहीं हुआ, बल्कि वह जैसा कि मनुष्य का स्रष्टा है और उसकी सम्पूर्ण एवं बाह्य शक्तियों का पैदा करने वाला है वैसा ही वह मनुष्य का क़ायम रखने वाला भी है। अर्थात् जो कुछ बनाया है उसे अपने विशेष सहारे से सुरक्षित रखने वाला है। तो जब कि ख़ुदा का नाम क़य्यूम (क़ायम रखने वाला) भी है अर्थात् अपने सहारे से सृष्टि को क़ायम रखने वाला। इसलिए मनुष्य के लिए अनिवार्य है कि जैसा कि वह ख़ुदा के सृजन करने के गुण से पैदा हुआ है ऐसा ही वह अपनी पैदायश के नक़्श को ख़ुदा की क़य्यूमियत (कायम रखने) के द्वारा बिगड़ने से बचाए, क्योंकि ख़ुदा के स्रष्टा होने के गुण ने मनुष्य पर यह उपकार किया कि उस को ख़ुदा के रूप पर बनाया। तो इसी प्रकार ख़ुदा की क़य्यूमियत ने चाहा कि वह उस पवित्र मानवीय नक़्श को जो ख़ुदा के दोनों हाथों से बनाया गया है गन्दा और ख़राब न होने दे। इसलिए मनुष्य को शिक्षा दी गई कि वह क्षमायाचना (इस्तिग़फ़ार) के द्वारा शक्ति मांगे। तो यदि संसार में गुनाह का अस्तित्त्व भी न होता तब भी इस्तिग़फ़ार होता। क्योंकि असल इस्तिग़फ़ार इसलिए है कि जो ख़ुदा के स्रष्टा होने ने मनुष्यता की इमारत बनाई है वह इमारत ध्वस्त न हो और क़ायम रहे तथा ख़ुदा के सहारे के बिना किसी वस्तु का क़ायम (स्थापित) रहना संभव नहीं। अत: मनुष्य के लिए यह एक स्वाभाविक आवश्यकता थी जिस के लिए इस्तिग़फ़ार का निर्देश है। इसी की ओर पवित्र क़ुर्आन का निर्देश है। इसी की ओर पवित्र क़ुर्आन में यह संकेत किया गया है कि

اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَالْحَيُّ الْقَيُّوْمُ (अलबक़रह – 256)

अर्थात् ख़ुदा ही है जो उपासना (इबादत) के योग्य है, क्योंकि वही जीवित करने वाला है और उसी के सहारे से मनुष्य जीवित रह सकता है। अर्थात् मनुष्य का प्रकटन एक स्रष्टा को चाहता है और एक क़य्यूम को ताकि स्रष्टा उसे पैदा करे और क़य्यूम उसको बिगड़ने से सुरक्षित रखे। अत: वह ख़ुदा स्रष्टा भी है और क़य्यूम भी। फिर जब मनुष्य पैदा हो गया तो स्रष्टा होने का काम तो पूरा हो गया परन्तु विशेषताओं का काम हमेशा के लिए है। इसीलिए हमेशा के इस्तिग़फ़ार की आवश्यकता पड़ी। तो ख़ुदा की प्रत्येक विशेषता के लिए एक वरदान है तो इस्तिग़फ़ार क़य्यूमियत की विशेषता का लाभ प्राप्त करने के लिए करते रहने की ओर संकेत – सूरह फ़ातिहा की इस आयत में है

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (अलफ़ातिहा – 3)

अर्थात् हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते हैं और तुझ से ही इस बात की सहायता चाहते हैं कि तेरी क़य्यूमियत और रबूबियत (प्रतिपालन) हमें सहायता दे और हमें ठोकर से बचाए ताकि ऐसा न हो कि कमज़ोरी प्रकट हो जाए और हम इबादत न कर सकें।

(अस्मत-ए-अंबियाय, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 18 पृष्ठ 671-672)

अत: इबादतों के करने के लिए, शैतान के हमलों से बचने के लिए, अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने के लिए अस्तग़फ़ार एक इंतिहाई महत्वपूर्ण और ज़रूरी चीज़ है। केवल यह नहीं कि जब कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो फिर ही अस्तग़फ़ार करना है। नि:संदेह उस वक़्त भी अस्तग़फ़ार और तौबा बहुत ज़रूरी है क्योंकि पिछले गुनाह की बख़शिश और भविष्य के गुनाहों से बचाने के लिए अल्लाह तआला की मदद की ज़रूरत है जो अस्तग़फ़ार के द्वारा से मिलती है। अत: गुनाह होने पर भी और नहीं होने पर भी दोनों सूरतों में अस्तग़फ़ार इंतिहाई महत्वपूर्ण है। शैतान तो हमारे रास्ते पर खड़ा है। इन्सान अपनी कोशिशों से इस से बच नहीं सकता। इन्सान यह कह दे कि मैं अपनी कोशिश से इस से बच जाऊँगा तो संभव नहीं। इस का एक ही मार्ग है कि अल्लाह तआला से मदद चाही जाए और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरी मदद हासिल करने के लिए, मेरी मदद चाहने के लिए तुम कसरत से अस्तग़फ़ार करो। यही मार्ग है जो भविष्य के शैतानी हमलों से भी महफ़ूज़ रखेगा और पिछले गुनाहों की माफ़ी का भी माध्यम बनेगा। इन्सान कमज़ोर है इसलिए अस्तग़फ़ार बहुत ज़रूरी है क्योंकि अस्तग़फ़ार ताक़त देता है। अस्तग़फ़ार ताक़त देता है कि इंसानी कमज़ोरीयों से बचाए और शैतान के हमलों से बचने की ताक़त दे। अत: लगातार अस्तग़फ़ार अल्लाह तआला की सिफ़त काय्यूमियत को हरकत में लाएगी और अस्तग़फ़ार करने वाला हर बुराई से बचाया जाएगा। अल्लाह तआला तो अपनी तरफ़ आने वाले को अपने साथ चिमटाने वाला है। जो व्यक्ति गुनाहों करने के बाद तौबा करते हुए उसकी तरफ़ आता है अल्लाह तआला उस की भी तौबा क़बूल करता है और जो गुनाहों से बचने के लिए, शैतानी हमलों से बचने के लिए उस की तरफ़ दौड़ता है अल्लाह तआला उस का अस्तग़फ़ार भी क़बूल करता है। उसे शैतान के हमलों से बचाता है। अल्लाह तआला की रहमत और बख़शिश की वुसअत कितनी ज़्यादा है इस बारे में स्वयं अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि यह हर चीज़ पर हावी है। इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी एक व्यक्ति का क़िस्सा सुनाते हुए फ़रमाते हैं कि उसने निनानवे क़तल किए। आख़िर पछतावा हुआ और तौबा का ख़्याल आया। आख़िर वह एक ज्ञानी के पास गया। उस से तौबा के बारे में पूछा। उसने कहा इतने गुनाह और इतने क़तल कर के तुम किस तरह बख़्शे जा सकते हो? उस व्यक्ति ने उस ज्ञानी को भी क़तल कर दिया और इस तरह 100 क़तल हो गए। इसके बाद फिर उसे पछतावा हुआ। जब सौ क़तल हो गए तो फिर पछतावा हुआ कि यह मैंने क्या कर दिया। फिर एक बड़े ज्ञानी के पास पहुंचा। उस से बात की। उसने कहा कि अल्लाह तआला कहता है हाँ तौबा का दरवाज़ा तो हर वक़त खुला है। यदि तुम हक़ीक़ी तौबा करना चाहते हो तो फिर सुनो कि अमुक इलाक़े में जाओ। वहां लोग अल्लाह तआला की इबादत में व्यस्त होंगे, दीन के काम कर रहे होंगे। तुम उनके साथ शरीक हो जाओ लेकिन रखो! फिर अपने इलाक़े में वापस नहीं आना। हक़ीक़ी तौबा यही है कि फिर पुराने राबते जो गुनाह का द्वारा बनते रहे हैं वे सब ख़त्म करने होंगे। हक़ीक़ी तौबा यही है कि फिर इस इलाक़े में वापस नहीं आना। इस लिए वह उस तरफ़ चल पड़ा। अभी आधा रास्ता तै किया था कि मौत आ गई। जब मर गया तो रहमत और अज़ाब के फ़रिश्ते पहुंच गए और आपस में झगड़ने लगे कि उसे हमने अपने साथ ले जाना है। रहमत का फ़रिश्ता यह कहता था कि इस व्यक्ति ने तौबा कर ली थी इसलिए यह जन्नत में जाएगा। अज़ाब का फ़रिश्ता यह कहता था कि उसने ज़िंदगी में कोई नेकी नहीं की, कोई नेक काम नहीं किया। यह किस तरह हो सकता है कि यह जन्नत में जाए? यह नहीं बख़्शा जा सकता। इतने में एक तीसरा फ़रिश्ता भी आया और एक सूरत पैदा हुई जिसने निर्णायक बन कर यह फ़ैसला किया कि जिस इलाक़े से यह आ रहा है और जिस तरफ़ जा रहा है उसकी दूरी नाप लो। इस में से जिस इलाक़े के वह ज़्यादा क़रीब होगा उसे वहीं ले जाना। जब उन्होंने फ़ासिला नापा तो वह उस इलाक़े के ज़्यादा क़रीब था जिस तरफ़ वह गुनाहों से तौबा करने और नेक काम करने के लिए जा रहा था तो इस पर रहमत के फ़रिश्ते उसे जन्नत में ले गए।

(सही मुस्लिम, किताबुत्तौब: बाब कबूल तौब: अल्कातिल व इन कसोर कत्लुहू ,हदीस 7008)

तो यह हैं अल्लाह तआला की बख़शिश के सामान। इंतिहाई ज़ालिम और क़ातिल के भी, जब उसने सेहत की हालत में तौबा की तो उस ने बख़शिश के सामान कर दिए। आजकल बहुत से बच्चे भी और नौजवान भी यह सवाल करते हैं कि अल्लाह तआला किस हद तक बख़्शाता है तो इस हदीस से वाज़िह है कि अल्लाह तआला ने जो फ़रमाया है कि मैं तौबा क़बूल करता हूँ और मेरी रहमत बहुत वसीअ है तो इस की कोई हद नहीं लेकिन शर्त यह है कि इन्सान हक़ीक़ी तौबा करने वाला हो। एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! अल्लाह तआला अपने बंदों की तौबा पर इतना ख़ुश होता है कि इतना वह व्यक्ति भी ख़ुश नहीं होता जिसे रेगिस्तान और जंगल में अपनी गुमशुदा ऊंटनी मिल जाए।

(सही बुख़ारी, किताबुद्दअवात बाबबुद्दअवात ، ,हदीस 6309)

अल्लाह तआला तो अपनी तरफ़ बढ़ने वालों की तरफ़ बढ़ता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया (अल्लाह तआला फ़रमाता है कि) यदि कोई एक हाथ मेरे क़रीब आता है तो में दो गुना उसके क़रीब होता हूँ दो हाथ उस के क़रीब जाता हूँ। यदि वह चल कर आता है तो मैं दौड़ कर आता हूँ।

(सही बुख़ारी, किताबुत्तौहीद बाब क़ौललल्लाह तआला व यहज़रोकुमुल्लाह नफ्सहू ,हदीस 7405)

अत: यह हमारा काम है कि अपने आपको गुनाहों से बचाने के लिए भी और अपने गुनाह माफ़ करवाने के लिए भी अल्लाह तआला की तरफ़ बढ़ें और जहन्नुम से बचें और यह महीना अल्लाह तआला ने ख़ास इस काम के लिए हमें दिया है। इस से फ़ायदा उठाएं।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तौबा और क्षमा की वज़ाहत करते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि

"स्मरण रहे कि तौब: और क्षमा से इन्कार करना वास्तव में मनुष्य की उन्नतियों के द्वार को बन्द करना है, क्योंकि यह बात तो प्रत्येक के नज़दीक स्पष्ट और बहुत व्यापक बातों में से है कि मनुष्य स्वयं में पूर्ण नहीं बल्कि पूर्णता का मुहताज है और जैसा कि वह अपनी भौतिक हालत में पैदा होकर धीरे-धीरे अपनी जानकारियां बढ़ाता है पहले ही ज्ञानी और विद्वान पैदा नहीं होता। इसी प्रकार वह पैदा होकर जब होश संभालता है तो उसकी नैतिक हालत बहुत ही गिरी हुई होती है। तो जब कोई नई उम्र वाले बच्चे की हालतों पर विचार करे तो उसे स्पष्ट तौर पर ज्ञात होगा कि अधिकतर बच्चे इस बात के लालची होते हैं कि छोटी-छोटी लड़ाई के समय दूसरे बच्चे को मारें और अधिकतर उन से बात-बात में झूठ बोलने तथा दूसरे बच्चों को गालियां देने की आदत प्रकट होती है और कुछ को चोरी, चुगली, ईर्ष्या और कंजूसी की भी आदत होती है। फिर जब जवानी की मस्ती जोश में आती है तो उन पर तामसिक वृत्ति (नफ़्से-अम्मारा:) सवार हो जाती है और उन से प्राय: ऐसे व्यर्थ और अकथनीय कार्य प्रकट होते हैं जो स्पष्ट तौर पर दुराचारों में सम्मिलित होते हैं। कहने का सारांश यह है कि अधिकतर मनुष्यों के लिए पहला पड़ाव गन्दे जीवन का है, फिर जब भाग्यशाली मनुष्य प्रारंभिक आयु के सैलाब से बाहर आ जाता है तो फिर वह अपने ख़ुदा की ओर ध्यान देता है और सच्ची तौब: करके न करने वाली बातों से अलग हो जाता है और अपने स्वभाव के लिबास को पवित्र करने की चिन्ता में लग जाता है। सामान्य तौर पर यह मनुष्य के जीवन की घटनाएँ हैं जो मानव-जाति को तय करनी पड़ती है। इस से स्पष्ट है कि यदि यही बात सच है कि तौब: स्वीकार नहीं होती तो साफ़ सिद्ध होता है कि ख़ुदा का इरादा ही नहीं कि किसी को मुक्ति (निजात) दे। "

(चश्म-ए-मा'रिफ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 192-193)

और यह संभव नहीं है कि अल्लाह तआला का इरादा नहीं क्योंकि अल्लाह तआला तो कहता है कि मैं निजात देना चाहता हूँ।

फिर आप हैं कि " स्पष्ट हो कि तौब: अरबी शब्दकोश में रुजू (लौटने) करने को कहते हैं। इसी कारण पवित्र क़ुर्आन में ख़ुदा तआला का नाम भी तव्वाब है। अर्थात् बहुत रुजू करने वाला। इसके मायने ये हैं कि जब मनुष्य पापों से अलग होकर सच्चे दिल से ख़ुदा तआला की और रुजू करता है तो ख़ुदा तआला उस से बढ़ कर उसकी और रुजू करता है और यह बात सर्वथा प्रकृति के नियम के अनुकूल है। क्योंकि जब ख़ुदा तआला ने मानव-जाति के स्वभाव में यह बात रखी है कि जब एक मनुष्य सच्चे दिल से दूसरे मनुष्य की ओर रुजू करता है तो उसका दिल भी उसके लिए नर्म हो जाता है। तो फिर बुद्धि इस बात को क्योंकर स्वीकार कर सकती है कि बन्दा तो सच्चे दिल से ख़ुदा तआला की ओर रुजू करे परन्तु ख़ुदा उसकी ओर रुजू न करे। बल्कि ख़ुदा जिसका अस्तित्त्व अत्यन्त कृपालु और दयालु है वह बन्दे से बहुत अधिक उसकी ओर रुजू करता है। इसलिए पवित्र क़ुर्आन में ख़ुदा तआला का नाम जैसा कि अभी मैंने लिखा है **तव्वाब है। अर्थात् बहुत रुजू करने वाला।** तो बन्दे का रुजू तो लज्जा, शर्मिन्दगी, विनय और विनम्रतापूर्वक होता है और ख़ुदा तआला का रुजू रहमत और क्षमा के साथ। यदि रहमत (दया) ख़ुदा तआला की विशेषताओं में से न हो तो कोई मुक्ति नहीं पा सकता। अफ़सोस कि इन लोगों ने ख़ुदा तआला की विशेषताओं पर विचार नहीं किया और सम्पूर्ण आधार अपने कर्म और कार्य पर रखा है। परन्तु वह ख़ुदा जिसने बिना किसी कर्म के हज़ारों नेमतें मनुष्य के लिए पृथ्वी पर पैदा कीं क्या उसका यह आचरण हो सकता है कि मनुष्य जिसकी नींव कमज़ोर हो जब अपनी लापरवाही से सचेत होकर उसकी ओर रुजू करे और रुजू भी ऐसा करे कि जैसे मर जाए और पहला अपवित्र चोला अपने शरीर से उतार दे और उसकी प्रेम-अग्नि में जल जाए तो फिर भी ख़ुदा उसकी ओर दयापूर्वक ध्यान न दे। क्या इस का नाम ख़ुदा की प्रकृति का नियम है?"

(चश्म-ए-मा'रिफ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 133-134)

फिर आप फ़रमाया "ख़ुदा तआला के फ़ज़ल-ओ-करम का दरवाज़ा कभी बंद नहीं होता। इन्सान यदि सच्चे दिल से इख़लास लेकर रुजू करे तो वह बार बार क्षमा करने वाला है और तौबा को क़बूल करने वाला है। यह समझना कि किस-किस गुनाह-गार को बख़्शेगा ख़ुदा तआला के हुज़ूर सख़्त गुस्ताख़ी और बे-अदबी है। उसकी रहमत के खज़ाने वसीअ और असीमित हैं। इसके हुज़ूर कोई कमी नहीं। उसके दरवाज़े किसी पर बंद नहीं होते। अंग्रेज़ों की नौकरीयों की तरह नहीं है कि इतने तालीम-ए-याफ़ता को कहाँ से नौकरियां मिलीं। ख़ुदा के हुज़ूर जिस क़दर पहुँचेंगे सब आला मदारिज पाएँगे। यह निश्चित वादा है। वह इन्सान बड़ा ही बदक़िस्मत और बद-बख़्त है जो ख़ुदा तआला से मायूस हो और उसके प्राणों के अंत का वक़्त ग़फ़लत की हालत में उस पर आ जाए।'' जो ख़ुदा तआला से निराश हो और उसके प्राणों के अंत का वक़्त ग़फ़लत की हालत में उस पर आ जाए "नि:संदेह उस वक़्त दरवाज़ा बंद हो जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 296-297)

अत: अल्लाह तआला के क्षमा के दरवाज़े खुले हैं। हाँ यह ज़रूर है कि इन्सान सेहत की हालत में तौबा करे ना यह कि अंतिम सांस लेते हुए। अत: इन दिनों में हमें बहुत ज़्यादा तौबा और अस्तग़फ़ार करन चाहीए कि यह रमज़ान का महीना क़ुबूलियत-ए-दुआ का महीना भी है और फिर इसके अंतिम दस दिनों जहन्नुम से बचाने वाले भी है। गुनाहों से माफ़ी और नेकियां करने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला से ही मिलती है। यदि उस से हम जुड़ जाएं, अल्लाह तआला से हम जुड़ जाएं तो हमारी दुनिया-ओ-आक़िबत सँवर जाएगी। जैसा कि मैं ने कहा था कि हम अहमदियों के लिए तो कुछ जगह ज़मीनें इंतिहा से ज़्यादा तंग की जा रही हैं। इन मुश्किलात से निकलने के लिए एक ही हल है कि हम अपना संबंध ख़ुदा तआला से जोड़ लें। अल्लाह तआला से हमारा संबंध जुड़ गया, हमारे दुरूद और हमारे अस्तग़फ़ार अल्लाह तआला की प्रसन्नता को हासिल करने वाले हो गए तो दुश्मन हज़ार कोशिशें कर ले हमें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता लेकिन यदि अल्लाह तआला हमसे राज़ी नहीं तो दुनिया का कोई उपाय हमें फ़ायदा नहीं पहुंचा सकता। उनकी कोई कोशिश हमें फ़ायदा नहीं पहुंचा सकती। अत: हमें चाहिए कि ख़ुदा तआला से अपने इस संबंध को मज़बूत करें।

रमज़ान की दुआओं में मुख़ालिफ़ीन के छल से बचने के लिए भी बहुत दुआएं करें। जैसा कि मैं ने कहा है कि कुछ जगह अहमदियों पर बहुत ज़्यादा मुश्किलात तारी की जा रही हैं। बहुत ज़्यादा मुश्किलात में अहमदी गिरफ़्तार हैं। अल्लाह तआला उन के लिए आसानीयां पैदा फ़रमाए। उनको मुख़ालिफ़ीन के छल से महफ़ूज़ रखे। पाकिस्तान के अहमदी स्वयं भी विशेषता इन दिनों में अपने लिए और जमाअती हवाले से भी बहुत ज़्यादा दुआएं करें। फिर आजकल इसी तरह जो कोरोना की बीमारी फैली हुई है इस से भी महफ़ूज़ रहने के लिए बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला इस रोग से भी दुनिया को निजात दे, हमें भी महफ़ूज़ रखे। अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी रंग में दुरूद और इस्तिग़फ़ार करने वाला बनाए ।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा M.T.A इंटरनैशनल पर LIVE (सीधा प्रसारण और स्थानीय तौर पर निमंलिखित ग्यारह भाषाओं में इस का अनुवाद साथ-साथ किया गया। अरबी, अंग्रेज़ी, जर्मन, तुर्की, फ़ारसी, रूसी, अल्बानियन, बूज़नीन, बुल्गारियन बंगला और फ्रैंच)

इसके अतिरिक्त अरबी, बंगला और फ्रैंच का अनुवाद जर्मनी से सीधा M.T.A पर LIVE प्रसारित हुए और अंग्रेज़ी भाषा का अनुवाद लंदन से सीधा LIVE प्रसारित हुआ।

रेडीयो पर भी जर्मन भाषा के अतिरिक्त अन्य विभिन्न भाषाओं में विभिन्न फ़रीकंसीज़ पर अनुवाद प्रसारित होता रहा।

पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे।

आज प्रोग्राम के अनुसार रशियन देश, क्रोशिया और लथवानिया से आने वाले वफ़ूद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का प्रोग्राम रखा गया था। आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पधारे। वफ़ूद में शामिल लोग ने कुछ प्रश्न भी किए जिन के उत्तर दिए गए। जबकि यहां संक्षेप में इन मजालिस की कार्रवाई वर्णन की जा है।

रशियन दल की मुलाक़ात

सबसे पहले रशियन देशों के वफ़ूद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस वर्ष रशियन देशों से सम्बन्ध रखने वाले 40 लोगों पर आधारित दल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ। उनमें रशियन, तातार, ताजिक, आर्मेनियन, उज़बक, काज़िक और चेचेन इत्यादि क़ौमों के लोग शामिल थे। इन वफ़ूद में शामिल लोगों ने भी अपने विचारों और भावनाओ का प्रकटन किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुलाक़ात के आरंभ में इन वफ़ूद के सदस्यों से उनका हाल दरयाफ़त फ़रमाया और बारी-बारी सब मेहमानों से परिचय प्राप्त किया।

क़ाज़ख़सतान से सम्बन्ध रखने वाले एक मेहमान इस्लाम साहिब ने कहा कि उन्होंने 2000 में बैअत की थी। परन्तु आज वह अपने जीवन में पहली मर्तबा हुज़ूर अनवर से मिल रहे हैं।

किर्गीज़स्तान से सम्बन्ध रखने वाले एक मित्र नूरम साहिब ने कहा कि उन्होंने आज बैअत करने का फ़ैसला कर लिया है और वह आज बैअत करना चाहते हैं।

इसके बाद एक मेहमान ने अर्ज़ किया कि पिछले वर्ष हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मेरी पत्नी के लिए दवाई तजवीज़ की थी। पत्नी अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ठीक है। उन्हों ने कहा कि मैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

एक मेहमान विक्टर साहिब ने बताया कि वह पहले ईसाई थे और अल्लाह के फ़ज़ल से चार माह पूर्व अहमदियत स्वीकार की है

जॉर्जिया, आरमीनिया, कज़ाकिस्तान और चेचन्या से सम्बन्ध रखने वाले मेहमानों ने भी अपना परिचय करवाया। चेचन्या के एक मेहमान के बारे में बताया गया कि यह स्वयं तो अहमदी नहीं अभी ज़ेर तब्लीग़ हैं परन्तु उनके पिता अल्लाह के फ़ज़ल से अहमदी हैं और वहां के इमाम हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मेहमानों से दरयाफ़त फ़रमाया कि आज जलसा का पहला दिन था और आप में से कुछ जलसे में पहली दफ़ा आए हैं। आपको जलसा कैसा लग रहा है।

इस पर मेहमानों ने कहा कि हमेशा की तरह हमारी भावनाए बहुत अच्छी हैं। हमें यहां आकर बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।

एक मेहमान ने प्रश्न किया कि बहुत से मित्र कहते हैं कि इस्लाम अमन का धर्म है, मुहब्बत का धर्म है। तो यदि इस्लाम अमन और मुहब्बत का धर्म है तो इस्लाम में इतनी सख़्त सज़ाएं क्यों हैं? संगसार (पत्थरों से मारने) करने की सज़ा क्यों रखी गई है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जब तक क़ुरआन-ए-करीम में सज़ाओं के हवाला से शिक्षा नाज़िल नहीं हुई थी तो यहूद की शिक्षा के अनुसार सज़ाएं मिलती थीं। इस्लामी शिक्षा में तो सज़ाओं में बहुत नरमी के पहलू हैं। यहूदी शिक्षा के अनुसार संगसारी की सज़ा थी परन्तु बाद में क़ुरआन-ए-करीम ने तो कोड़ों की सज़ा का वर्णन ही किया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक रिवायत में आता कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक व्यक्ति आया और कहा कि हे अल्लाह के रसूल! मैंने व्यभिचार किया है। अल्लाह की किताब का हुक्म मुझ पर नाफ़िज़ फ़र्मा दीजिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे रुख फेर लिया। उसने फिर दूसरी मर्तबा कहा कि मुझसे ग़लती सरज़द हुई है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फिर उससे रुख फेर लिया। इस व्यक्ति ने तीसरी बार फिर कहा कि हे अल्लाह के रसूल मैंने यह ग़लती की है। मुझ पर अल्लाह की किताब का हुक्म नाफ़िज़ कर दीजिए। यहाँ तक कि उसने चार बार इस तरह कहा तो फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसको संगसार करने का हुक्म दिया। इस लिए जब उसे पत्थर मारे गए और उसने पत्थरों की चोट महसूस की तो बर्दाश्त नहीं कर पाया और भाग खड़ा हुआ। तो लोगों ने उसको पकड़ा और क़तल कर दिया। फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आकर यह सब वर्णन किया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तुमने उस को छोड़ क्यों नहीं दिया, शायद वह तौबा कर लेता और अल्लाह उसकी तौबा स्वीकार कर लेता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इस तरह यह रिवायात भी हैं और शिद्दत पसंद लोगों ने इन रिवायात को ले लिया है। जबकि क़ुरआन-ए-करीम से तो ये बातें साबित नहीं होतीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह भी रिवायत में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक व्यक्ति आया और कहने लगा कि मुझ से अल्लाह के आदेशों के विरुद्ध कार्य हो गया है और मुझ पर हद फ़रमाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे कुछ न पूछा। इस के बाद नमाज़ का समय हो गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद फिर वह व्यक्ति हुज़ूर के पास हाज़िर हुआ और कहने लगा कि मुझसे अल्लाह के आदेशों के विरुद्ध कार्य हो गई है। मुझ पर अल्लाह का हुक्म नाफ़िज़ कीजिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुमने हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी? उसने कहा कि हाँ पढ़ी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तो फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारा गुनाह बख़श दिया है। तो इस्लामी सज़ाएं जहां सख़्त हैं वहां उनमें नरमी भी बहुत है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पूर्णता रहमतुल लिल्लआलमीन थे।

एक रशियन मित्र जो पहले ईसाई थे और इस वर्ष मार्च में उन्हें अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ मिली है, वह बड़ी शिद्दत से हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का इंतिज़ार कर रहे थे। इस मुबारक अवसर पर उनसे ख़ुशी सँभाले नहीं जा रही थी। तस्वीर से पूर्व उन्होंने हुज़ूर अनवर के पवित्र हाथ को प्रसन्नता के साथ चूमा और बाद में बताया कि मेरी सारे जीवन के ख़ुशी के क्षण और अवसरों पर आज की ख़ुशी का लम्हा भारी है। मैं सोच भी नहीं सकता था कि केवल तीन माह में ही मुझे प्यारे हुज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हो जाएगा।

एक महिला जो अपने विकलांग बच्चे के साथ आई थी जब हुज़ूर अनवर ने उनके बच्चे को अपने हाथ से पकड़ कर सहारा दिया और अपने साथ खड़ा किया तो वह अपनी भावनाओ पर काबू नहीं रख सकें और लगभग आध घंटा रोते रहें और कहते रहें कि मैंने सारे जीवन में नहीं सोचा था कि इतने मुबारक इन्सान से कभी मिलूंगी और वह इस तरह मुहब्बत और शफ़क़त का व्यवहार फ़रमाएँगे। वह विकलांग बच्चा जिसकी आयु 11 वर्ष है चल नहीं सकता परन्तु प्रत्येक बात समझता है और इशारे से कुछ शब्दों में उत्तर देता है। जब इस से पूछा कि हुज़ूर के साथ मुलाक़ात कैसी रही तो उसने मुस्कुरा कर हाथ ऊपर कर के कहा ,"ख़राशो" अर्थात बहुत अच्छी थी।

काज़किसतान से एक नौजवान जिन्हों ने 2000 में बैअत की थी और बहुत मुख़लिस अहमदी हैं उनकी हुज़ूर से मुलाक़ात का यह पहला अवसर था। वह कहने लगे कि :

हुज़ूर को देख कर मुझे जीवन में पहली बार महसूस हुआ कि मैं बात नहीं कर सकता क्योंकि जब मुझे यह विचार आया कि ख़ुदा का ख़लीफ़ा कुछ क़दम पर मेरे सामने है तो मुझ पर रुहानी रोब तारी हो गया। धीरे-धीरे यह कैफ़ीयत जाती रही और बे-इंतिहा मुहब्बत ने इस की जगह ले ली और जब हुज़ूर ने तस्वीर के लिए बुलाया तो मैं बे-इख़्तियार हुज़ूर से चिमट जाना चाहता था। बड़ी मुश्किल से मैंने अपने आप को रोका इस प्रयास में मुझे थोड़ी देर बाद एहसास हुआ कि मैंने हुज़ूर की कोहनी को बड़ी

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

सख़्ती से दबा रखा है।

रशियन दल में काज़ान (तातारिस्तान) से "गुल्निहर" साहिबा पहली बार जलसा में शामिल हुईं। उन्होंने अपनी भावनाओ का प्रकटन करते हुए कहा :

मैं पहली बार किसी जलसा में शामिल हुई हूँ और यह जलसा मेरे लिए बिल्कुल एक नया तजुर्बा था और इस जलसा ने मेरे ईमान को बहुत तक़वियत दी है। मैंने देखा कि हुज़ूर अनवर जिस ओर भी जाते प्रत्येक का प्रयास होता कि वह उस जगह पहुंच कर हुज़ूर को सलाम अर्ज़ करे और यह मुहब्बत दो तरफ़ा थी। जब भी हुज़ूर किसी के सलाम का उत्तर देते तो उसकी ख़ुशी देखने वाली होती थी। मैं ने अपनी जीवन में पहली बार इतना बड़ा मजमा मुस्लमानों का देखा है जिसमें सब एक ही उद्देश्य के लिए इकट्ठे हुए थे। और समस्त इंतिज़ामात और कार्रवाई देखकर मैं बहुत हैरान हूँ कि किस तरह सब काम एक प्रबन्ध के तहत सरअंजाम पा रहे हैं। और इतने बड़े मजमा में कोई बदनज़्मी नज़र नहीं आई। मुझे जलसे का इतना मज़ा आया है कि मैं अब अगले वर्ष भी आने की कोशिश करूंगी।

मास्को से आने वाली फ़ैमिली में ग़स्सान साहिब अपनी रशियन पत्नी के साथ आए हुए थे और उनका एक बेटा फ्रांस से आया था। ग़स्सान साहिब का सम्बन्ध शाम से है परन्तु मास्को में रहते हैं । ग़स्सान साहिब ने 2010 में अपनी दूसरी रशियन पत्नी और बच्चों समेत बैअत की तौफ़ीक़ पाई थी। ग़स्सान साहिब इस वर्ष पहली मर्तबा जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए थे। जलसा सालाना बर्तानिया में दोबार शामिल हुए हैं। वह जलसा सालाना से बहुत प्रभावित हुए हैं और सब प्रोग्राम और कार्रवाई को बहुत पसंद किया है। विशेष तौर पर हुज़ूर अनवर के भाषण से बहुत ज़्यादा प्रभावित हुए हैं। ग़स्सान साहिब का हुज़ूर अनवर से मुहब्बत और सम्बन्ध भी बहुत देखने के योग्य था। मुलाक़ात के समय बार-बार हुज़ूर के मुबारक हाथों को चूमते और अपने शरीर के साथ लगाते।

इस वर्ष जलसा सालाना में उनकी पहली पत्नी से एक बेटा भी आया हुआ था जो हॉलैंड में ज़ेर-ए-ताअलीम है। उसने अल्लाह के फ़ज़ल से अपनी ख़्वाब की बिना पर बैअत की तौफ़ीक़ पाई।

स्वीडन से एक रशियन मित्र "आई तोरे" साहिब भी अपनी फ़ैमिली के साथ इस जलसा में शामिल हुए। इस फ़ैमिली ने 2013 ई. में अहमदियत स्वीकार की थी परन्तु अभी तक हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य नसीब नहीं हुआ था। उन्हें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की व्यस्तता के सम्बन्ध में ज्ञात था इस लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के हवाला से कहने लगे कि हुज़ूर बहुत व्यस्त होते हैं यदि मुलाक़ात न भी हो तो कोई बात नहीं कम से कम हम हुज़ूर को नमाज़ों और जलसा गाह में आते-जाते तो देख लेंगे।

परन्तु जलसा के मध्य उनकी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात भी हो गई। और जब उनकी मुलाक़ात ख़त्म हुई तो बाहर आकर बहुत जज़बाती ढंग में कहने लगे कि आज मेरे जीवन का सबसे ख़ुश-क़िस्मत दिन है कि हमने हुज़ूर को इतने क़रीब से देख भी लिया, हाथ मिला लिया और तस्वीर भी खिचवा ली।

स्वीडन के मुबल्लिग़ ने बताया कि :

विनीत उन्हें शाम के खाने के लिए हाल की ओर लेकर चला तो यह तेज़ रफ़्तारी से आगे-आगे चलने लगे। मैंने पीछे से आवाज़ दी कि मुझे भी साथ ले लें आप तो बहुत तेज़ चल रहे हैं, तो कहने लगे कि आज मुझ में एक ताक़त आ गई है और मुझे लगता है कि मानो आज मेरी दूसरा जन्म हुआ है।

खाने के बाद विनीत ने कहा कि नमाज़ें भी हुज़ूर की इक़तिदा में पढ़ ली हैं अब रात भी हो गई है आप थक गए होंगे। अब होटल चलें? तो कहने लगे कि चाय पी लें फिर चलते हैं। विनीत ने कहा कि बेशक चाय पी लें परन्तु आपके होटल में भी चाय का प्रबन्ध है आप वहां भी चाय पी सकते हैं। तो उत्तर में कहने लगे कि नहीं जो मज़ा जलसे की चाय का है वह कहीं नहीं है और बहुत संजीदगी से कहने लगे कि मैंने यह बात यूँही नहीं की बल्कि मेरा ईमान है कि जिस जगह हुज़ूर के क़दम पड़ते हैं वहां का पानी बाबरकत हो जाता है इस लिए यहां के पानी में इतनी बरकत पड़ गई है कि इस जैसा मज़ा और नहीं।

स्वीडन के मुबल्लिग़ वर्णन करते हैं : जलसा के आख़िरी दिन जब हम वापस अपनी गाड़ी की ओर जा रहे थे तो जलसा गाह के बाहर लोगों की भीड़ देखकर उनकी पत्नी ने मुझे पूछा कि यहां इस क़दर लोग क्यों जमा हैं तो विनीत ने बताया कि हुज़ूर अब यहां से विदा होने वाले हैं इस लिए लोग हुज़ूर के दीदार के लिए मुंतज़िर हैं। यह बात सुनते ही अपने बेटे और बेटी का समस्त सामान स्वयं माता ने उठा लिया और उनको कहा कि दौड़ो और तुम लोग भी वहां जा कर खड़े हो जाओ और हुज़ूर के दर्शन करो। बच्चे जिनकी आयु 11 और 12 वर्ष हैं उनको कहने लगीं कि जल्दी पहुँचो क्योंकि दर्शन के केवल कुछ सैकिण्ड ही मिलेंगे। जब बच्चे तेज़ी से जा रहे थे तो पीछे से बुलंद आवाज़ से कहती जा रही थीं कि दौड़ कर जाओ। बाद में वह स्वयं भी जब वहां पहुंच गईं और बच्चों के साथ इंतिज़ार में खड़ी हो गईं तो बच्चे कहीं इधर-उधर देखने लगते तो उनके चेहरों को हाथ से पकड़ कर उस दरवाज़े की ओर कर देतीं कि इधर देखो हुज़ूर किसी भी समय पधार सकते हैं।

मुबल्लिग़ साहब बताते हैं : एक और बात काबिल-ए-वर्णन है कि आई तोरे साहिब की दाई टांग की nerves का कुछ मसला है जिसके कारण से स्वीडन से जर्मनी आते समय प्रत्येक घंटे के बाद वह मुझे कहते थे कि गाड़ी रोकें टांग में ख़ासी तकलीफ़ है। इस तरह बार-बार हमें गाड़ी रोकना पड़ती और यह साहिब कुछ चहलक़दमी करते और फिर यात्रा जारी रहती। परन्तु जलसे से वापसी पर निरन्तर 17 घंटे की ड्राईव में उन्होंने एक दफ़ा भी मुझे गाड़ी रोकने के लिए नहीं कहा और हस्ते मुस्कुराते यात्रा पूरी की। जब घर के क़रीब पहुंच गए तो विनीत ने उन्हें स्वयं पूछा कि क्या बात है आपे ने आज वापसी के यात्रा में एक दफ़ा भी अपनी टांग की तकलीफ़ का वर्णन नहीं किया और गाड़ी नहीं रुकवाई? फ़ौरन पिछली सीट पर बैठी हुई अपनी पत्नी की ओर हैरत से देखा और बोले वाक़ई मुझे तो याद भी नहीं रहा कि मेरी टांग में कुछ मसला था। कहने लगे कि यह निश्चित तौर पर हुज़ूर के व्यक्तित्व की बरकत है कि न केवल मुझे तकलीफ़ नहीं हुई बल्कि मुझे यह तकलीफ़ याद भी नहीं रही।

मुलाक़ात के अंत में समस्त सदस्यों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दल के समस्त सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए और प्रेम पूर्वक छोटे बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

करोशीन दल के साथ मुलाक़ात

इसके बाद आठ बज कर 35 मिनट पर देश क्रोशिया से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात शुरू हुई। क्रोशिया से आठ लोग पर आधारित दल था।

मुलाक़ात के आरंभ में दल के समस्त सदस्यों ने बारी-बारी अपना परिचय करवाया और हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात होने पर ख़ुशी का प्रकटन किया।

दल की एक मेंबर महिला ने प्रश्न किया कि जब से आप ख़लीफ़ा बने हैं आपका जीवन कैसे तबदील हुआ है और इसने आपकी फ़ैमिली को कितना प्रभावित किया है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बहुत बड़ा अंतर पड़ा है। मेरा प्रतिदिन का मामूल आज के मामूल से बहुत विभिन्न था। सुबह से शाम तक जो मैं करता हूँ वह सब जमाअत की सेवा है। तो बहुत बड़ा बदलाव हुआ है। मुझे वह काम भी करने पड़े हैं। जिनकी मुझे आदत नहीं थी। मुझे नहीं याद शायद ही कभी मैंने कोई तक़रीर या कोई लैक्चर दिया होगा या स्टेज पर आया हूँगा परन्तु अब इतनी कसरत से होता है कि मैं इस को सोच भी नहीं सकता था।

इस के बाद एक महिला ने अर्ज़ किया : मैं ईसाई हूँ और क़ुरआन-ए-करीम मेरी नज़र में एक सच्चाई है और यह बाइबल की निसबत मेरे दिल के ज़्यादा क़रीब है। मैं दोनों का अध्ययन कर रही हूँ रोज़ तुलना कर रही होती हूँ बहुत दिलचस्प काम है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़त फ़रमाने पर महिला ने बताया कि वह क़ानून पढ़ रही हैं और फ़ारिग़ औक़ात में अध्ययन करती हैं। और अध्ययन का यह काम बहुत दिलचस्प है। उदाहरणत: मैं अपने दोस्तों को कहती हूँ कि सूअर खाना बाइबल ने भी हराम किया है परन्तु यह किसी को मालूम नहीं होता।

उन्हों ने अर्ज़ किया कि : मुझे एक बात अहमदियों के बारे में समझ नहीं आती कि उन्होंने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और उनके ख़लिफ़ा की तसावीर दीवारों पर लगाई होती हैं। मैं जानती हूँ कि मसीह अलैहिस्सलाम और आप रुहानी व्यक्तित्व हैं परन्तु मेरे लिए तसावीर कोई रुहानी हैसियत नहीं रखतीं। उदाहरण के तौर पर ईसा अलैहिस्सलाम को मानने के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मानने के लिए उनकी तस्वीर की आवश्यकता नहीं है और आपको उनके संदेश की याद-दिहानी के लिए किसी तस्वीर की आवश्यकता नहीं है। अर्थात किसी के पास ख़ुदा की तस्वीर नहीं है परन्तु हम उस पर ईमान रखते हैं तो तसावीर क्यों रखी जाती हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

यह तसावीर उन लोग की मुहब्बत के कारण से लगाई जाती हैं जैसा कि आप अपनी फ़ैमिली की तसावीर भी लगाते हैं तो यह एक विभिन्न चीज़ है। परन्तु यदि यह समझा जाए कि ये तसावीर कोई रुहानी प्रभाव रखती हैं तो यह बिल्कुल ग़लत है तसावीर में ऐसा कुछ नहीं है। इस लिए हमारी जमाअत में फ़िक्ह के लिए एक कमेटी क़ायम है और पर्याप्त अरसा पूर्व उन्होंने इस बात का फ़तवा दिया हुआ है कि यदि कहीं यह समझ कर तस्वीर लगाई जा रही है कि इस से कुछ प्राप्त करना है या इसके आगे झुकना है तो तस्वीर लगाने की आज्ञा नहीं है यहाँ तक कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भी तस्वीर लगाने की आज्ञा नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : एक दिलचस्प बात जो मेरा विचार है वह यह है कि मसीह दो हैं। एक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मसीह और एक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मसीह हैं। मैं समझता हूँ कि मसीह मूसा अलैहिस्सलाम और मसीह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दोनों नबी हैं। मैं ईसा को नबी मानता हूँ और दोनों की तसावीर उपस्थित हैं। हज़रत ईसा की तस्वीर कफ़न मसीह पर है और मेरे ईमान के अनुसार यह ईसा अलैहिस्सलाम की असली तस्वीर है और दूसरी ओर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो व स्सलाम की तस्वीर भी अब तक महफ़ूज़ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : कभी कबार ऐसा भी हुआ कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को पसंद नहीं किया कि आपकी तस्वीर को प्रत्येक जगह दिखाया जाए और लगाया जाए। एक मर्तबा तो ऐसा भी हुआ कि आपके एक बड़े मुख़लिस सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप अलैहिस्सलातो वस्सलाम की तस्वीर पोस्टकार्ड पर छपवा दी और आपको मालूम है कि उस ज़माना में पोस्टकार्ड भिजवाने का रिवाज था। जब हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को इस बात का ज्ञान हुआ तो आप अलैहिस्सलाम ने इन समस्त पोस्ट कारडज़ को जलाने का इरशाद फ़रमाया। तो केवल तस्वीर कुछ नहीं कर सकती परन्तु कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो किसी के चेहरे को देखकर उस की सच्चाई जान जाते हैं। और ऐसा हुआ भी है कि यूरोप, अफ़्रीक़ा में बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हों ने बैअत की है उन्होंने मुझे लिखा कि उन्होंने ख़्वाब में किसी को देखा है और वह इस व्यक्तित्व को नहीं जानते और इस व्यक्तित्व ने ख़्वाब में कहा है कि उस के साथ शामिल हो जाओ या ख़्वाब देखने वाले को कोई राह दिखलाई है। और बाद में जब किसी अहमदी मित्र ने उन्हें यह तस्वीर दिखाई, अपने घर लेकर गया, किसी मैगज़ीन इत्यादि में तस्वीर दिखाई तो उन्हों ने खुले रूप में इस बात का प्रकटन किया कि यह ही वह व्यक्तित्व है जिसको उन्होंने सवप्न में देखा था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अत: कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वह चेहरा देखकर बात अख़ज़ कर लेते हैं और कुछ में यह सलाहीयत होती है कि तस्वीर देखकर बहुत कुछ जान जाते हैं। तो यही कारण है, नहीं तो इसके अतिरिक्त कोई लाभ नहीं है। यदि कोई यह समझता है कि इससे रूहानियत बढ़ जाती है तो कदापि नहीं। मैं स्वयं भी यह चीज़ नहीं पसंद करता 2006 ई. में जब आस्ट्रेलिया की यात्रा की तो वहां की जमाअत ने महिकमा डाक से सम्पर्क कर के मेरी तस्वीर के साथ एक डाक टिकट जारी करवाई। जब मुझे इस बात का ज्ञान हुआ तो मैंने समस्त नष्ट करवा दीं।

एक मेंबर ने प्रश्न किया कि यह कैसे हुआ कि पहले ख़लीफ़ा के अतिरिक्त समस्त एक ही फ़ैमिली के हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह ख़ुदा तआला का फ़ैसला होता है। यह ख़ुदा की मर्ज़ी है। जिस तरह ख़ुदा तआला चाहे वैसा ही होता है। यह कैसे सम्भव हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नसल से बहुत से अंबियां आए। तो ये ख़ुदा तआला की मर्ज़ी है कि वह किस को मुंतख़ब करता है। एक इलैक्ट्रॉल कॉलेज के माध्यम ख़लीफ़ा का इंतिख़्वाब होता है और ख़ुदा तआला ही उन सदस्यों के दिलों में डालता है और वही मुंतख़ब करते हैं। किसी को कुछ मालूम नहीं होता कि किस ने मुंतख़ब होना है।

इस पर दल की इस मेंबर ने प्रश्न किया कि क्या कभी आपके ज़हन में यह विचार आया है कि आप भी ख़लीफ़ा मुंतख़ब हो सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जब मैं मुंतख़ब हुआ तू मैं ने इलैक्ट्रॉल कॉलेज के चेयरमैन से पूछा कि क्या ऐसी कोई गुंजाइश उपस्थित है कि माज़रत की जा सके।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया : दूसरे ख़लीफ़ा के इंतिख़्वाब के समय बल्कि इंतिख़्वाब से पहले जमाअत में मतभेद हो गया था। आपको शायद मालूम हो कि जमाअत के दो समूहों हैं। एक बहुत ही छोटा ग्रुप है और एक बड़ा गिरोह है जो ख़िलाफ़त पर विश्वास रखते हैं। जब यह मतभेद शुरू हुआ तो इस मतभेद के समय भी दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुख़ालिफ़ीन को कहा कि जिसे भी आप लोग बतौर ख़लीफ़ा मुंतख़ब कर लें, मैं उसे स्वीकार करूँगा। मुझे ख़लीफ़ा बनने का कोई शौक़ नहीं है।

एक मेंबर ने प्रश्न किया कि क्या आप लोग अन्य धर्मों से विश्वव्यापी धार्मिक चर्चा का समर्थन करते हैं? उदाहरणत: क्या आप कभी पोप से मिले हैं और यदि मिले हैं तो क्या बात हुई?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैंने कभी पोप से मिलने का प्रयास नहीं किया परन्तु हमारे दूसरे ख़लीफ़ा ने 1924 में एक मर्तबा प्रयास किया था परन्तु उसने मुलाक़ात नहीं की और यह बहाना दिया था कि चूँकि मेरा महल निर्माण अवस्था में है इस लिए स्वागत नहीं किया जा सकता, इत्यादि। इस दौर में इटालियन अख़बार ने भी यह ख़बर दी थी कि पोप ने मुलाक़ात से इस बहाने के कारण से इन्कार कर दिया है कि उस का महल निर्माण अवस्था में है। चूँकि पोप जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा को मिलना नहीं चाहता इस लिए उस का महल कभी भी मुकम्मल नहीं हो सकेगा।

दल की एक मेंबर ने प्रश्न किया कि क्या आप अन्य धर्मों के लीडरों से बात करेंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हमारी ओर से कोई रोक नहीं। हम तो open हैं और मिलना चाहते हैं। हमारे दिल खुले हैं, पिछली वर्ष God in 21st Century के नाम से हम ने गिल्ड हाल लंदन में इंटर फ़ेथ सैमीनार किया था। इसराईल से यहूदीयों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे। चर्च के प्रतिनिधि उपस्थित थे। दरोज़ी भी थे । हिंदुओं के प्रतिनिधि भी और दूसरे धार्मिक लीडरज़ भी उपस्थित थे। दलाईलामा का प्रतिनिधि भी शामिल हुआ था। मैंने भी वहां बात की थी। एक ही प्लेटफार्म पर सबको अवसर दिया। हमने स्वयं सारा प्रबन्ध किया था। हम तो पहले ही ऐसी प्रयास कर रहे हैं कि एक हाथ पर इकट्ठे हों और संसार में अमन क़ायम हो।

दल के एक मेंबर ने प्रश्न किया कि नौजवान नसल के लिए आप का सबसे बड़ा concern क्या है? आप उन के लिए क्या चाहते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैं नौजवान नसल के लिए और प्रत्येक अहमदी के लिए यही चाहता हूँ कि वह अपने ख़ुदा को पहचानें। दो बातें बहुत ज़रूरी हैं, जिसके बारे में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया है कि मैं ये दो बातें ले कर आया हूँ। उनमें से एक यह कि लोगों को अपने ख़ालिक़ के क़रीब करना और दूसरा मानवता के हुक़ूक़ की अदायगी का एहसास करना है। ये दो चीज़ें हैं जो प्रत्येक के लिए एहमीयत की हामिल हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि आपका यह प्रश्न है कि हमारे नौजवान भी अन्य मुस्लमानों की तरह चरमपंथी हैं तो हमें ऐसी कोई चिंता नहीं है। शुक्र है हम ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकतों से पवित्र हैं।

एक मेहमान ने प्रश्न किया कि किया अहमदी मुस्लमान देशों में अल्पसंख्यक ईसाई जमाअतों की सहायता करते हैं? जहां वे सुरक्षित नहीं होते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इस्लाम तो यही कहता है कि उन्हें महफ़ूज़ होना चाहिए। जहां हमें मालूम होता है, हम सहायता करते हैं। रब्वाह में 98 प्रतिशत आबादी अहमदी है। हमने अपनी ज़मीन से ईसाइयों को चर्च बनाने के लिए ज़मीन दी है। अभी हमें मुस्लमान देशों में ऐसी क़ुव्वत प्राप्त नहीं है कि हम बता सकें कि हक़ीक़ी इस्लामी हुकूमत कैसे होती है। एक हद तक हम उनकी सहायता करते हैं।

दल में उपस्थित एक मेहमान ने प्रश्न किया कि मैं अहमदिया जमाअत का अध्ययन कर रहा हूँ और किताब pathway to peace भी पढ़ रहा हूँ। इस के अंत में आपने विभिन्न लीडरों के नाम जो पत्र लिखे हैं वह दर्ज हैं। क्या आपको उनके उत्तर प्राप्त हुए हैं?

इस के उत्तर में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यूनाईटिड स्टेटस से तो नहीं मिला। प्रैज़ीडैंट के एक क़रीबी एडवाइज़र ने कहा था कि वह उत्तर के लिए बात करेगा। परन्तु कोई उत्तर नहीं आया। उनका कोई इदाराह है। शायद पैंटागौन ने उन्हें मना किया है कि इस ख़त का उत्तर नहीं देना। यदि दिया तो मुश्किल में पड़ जाओ गे। कैनेडा के प्रधानमंत्री ने उत्तर दिया था परन्तु इतना उचित उत्तर नहीं था। केवल यू.के के प्रधानमंत्री डेविड कैमरोन ने अच्छा उत्तर भिजवाया था और उस में sensible बातें लिखी थीं और यह भी लिखा था कि G8 उत्तर G7 है अपने न्यूक्लीयर हथियार कम करने पर ग़ौर कर रहे हैं और 2020 ई. तक पर्याप्त कमी हो जाएगी। इस तरह की पर्याप्त बातें लिखी थीं। यह उत्तर उपस्थित हैं इस लिए बता रहा हूँ। यदि कोई confidential बात होती तो मैं नहीं बताता।

करोशीन दल की एक मेम्बर या सीपा (josipa) साहिबा ने कहा : जलसा सालाना जर्मनी पर आने से पूर्व मैं ने जमाअत अहमदिया के मौजूदा प्रधान की किताब (World Crisis and the pathway to peace) का अध्ययन किया। इसी तरह साल 2014 और 2015 में अमन के बारे में आयोजित सिंपोज़ियम में

ख़लीफतुल मसीह के दोनों भाषणों का भी अध्ययन किया। मेरे ज़हन पर यह प्रभाव था कि जमाअत के मौजूदा प्रधान कुछ मुआमलात पर सख़्त आस्था रखते हैं और स्वभाव के भी सख़्त होंगे। जबकि जब मेरी जमाअत के प्रधान से मुलाक़ात हुई तो मैंने आपको एक बिल्कुल विभिन्न व्यक्ति पाया। आप अत्यधिक विनम्र, नर्म-दिल, ख़ुश-मिज़ाज और हँसमुख तबीयत के निकले। और अपने सम्बोधन से बहुत ही ख़ुशगुवार मूड में बातचीत करते हैं। और अपने नुक़्ता-ए-नज़र को बहुत ही सादे और सीधे शब्दों में प्रस्तुत करते हैं। इतनी ज़्यादा व्यस्तता के अतिरिक्त जिस ख़ुश-दिल्ली और मुहब्बत की भवना के साथ मिलते हैं वह बहुत प्रभावित है और साफ़ नज़र आता है कि ख़लीफतुल मसीह को किसी ग़ैबी ताक़त की ताईद प्राप्त है।

करोशीन दल के एक रुकन ब्रूनो (Bruno) साहिब ने कहा : मैंने जलसा सालाना के विभिन्न इंतिज़ामात का बड़ी गहराई से जायज़ा लिया है और साफ़ नज़र आ रहा है कि इतने बड़े इजतिमा को कामयाब तरीक़ से आयोजित करने के लिए बहुत उत्कृष्ट मंसूबाबंदी की गई है और समस्त कार्यकर्ताओं की भावनाओं से सेवा से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। जलसे के मध्य कहीं भी पुलिस नज़र नहीं आई। जिस इतमीनान, अमन और अनुशासन के साथ लोग जलसे के विभिन्न औक़ात में विभिन्न प्रोग्रामों में शामिल हुए कि ऐसे माहौल में वाक़ई पुलिस का कोई काम नहीं।

करोशीन दल की मुलाक़ात का यह प्रोग्राम आठ बज कर 55 मिनट तक जारी रहा इस के बाद दल के समस्त सदस्यों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक दल के सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए।

लाथान्विया से आने दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इस के बाद लाथान्विया से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात शुरू हुई। इस वर्ष लाथान्विया से 8 लोगों पर आधारित दल आया था। इस दल में विद्यार्थी प्रोफ़ैसर्ज़ एक कॉलेज की ऐडमिनिस्ट्रेटर और वकील शामिल हुए थे।

मुलाक़ात के आरंभ में दल के समस्त सदस्यों ने बारी-बारी अपना परिचय करवाया और इस बात पर ख़ुशी का प्रकटन किया कि आज उनकी ख़लीफतुल मसीह से मुलाक़ात हुई है।

इस के बाद एक मेंबर ने प्रश्न किया कि क्या हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी तक़ारीर स्वयं लिखते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मुझे स्वयं पता नहीं होता कि क्या कहना है। आज के ख़ुतबा के बारे में मैंने कल सोचा था। तक़ारीर इत्यादि भी मैं स्वयं ही तैयार करता हूँ। कुछ हवालाजात के लिए अपने दफ़्तर से सहायता लेता हूँ। तक़ारीर के TOPICS इत्यादि का इंतिख़्वाब मैं स्वयं करता हूँ और हवालाजात के लिए रहनुमाई देता हूँ कि मुझे अमुक-अमुक हवाला निकाल दें।

दल के एक मेंबर ने प्रश्न किया कि इस्लाम में सूअर का गोश्त खाना क्यों मना है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सूअर का गोश्त खाना तो बाइबल में भी मना है।

एक मेंबर ने प्रश्न किया कि हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने समय को विभिन्न कामों के लिए किस तरह manage करते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं स्वयं नहीं जानता। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ही सारे काम हो जाते हैं। पहले मेरे जीवन का मामूल बिल्कुल विभिन्न हुआ करता था परन्तु ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी सँभालने के बाद मेरे मामूलात में एक U-turn आ गया। मुझे नहीं मालूम कि यह मुझ से कैसे हो गया? अल्लाह ही था जो समस्त कामों को करने वाला था।

एक महिला ने प्रश्न किया कि इस्लाम ने चार शादीयों की आज्ञा क्यों दी है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जो चार शादीयों की आज्ञा दी है वह कुछ शरायत के साथ दी है। उदाहरणत: दो और तीन और चार की जो आज्ञा क़ुरआन-ए-करीम में है यह जंगों के हालात के पेश-ए-नज़र भी हो सकती है। जैसे आलमी जंगें हुईं तो बहुत से पुरुष जंगों में मारे गए और यहां जर्मनी में भी बे-तहाशा पुरुष मारे गए। और बड़ी संख्या में औरतें पीछे रह गईं। यदि चार शादीयों की आज्ञा होती तो फिर इन औरतों की भी शादी हो सकती थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इस्लाम से पूर्व भी लोग ज़्यादा शादियां करते थे और कई पत्नियाँ रखते थे। वह ईसाई थे या नास्तिक थे या बुतों को पूजने वाले थे वह कई-कई पत्नियाँ बीस-बीस, तीस-तीस पत्नियाँ रखते थे। कोई जितना बड़ा आदमी होता उस की उतनी ही ज़्यादा पत्नियाँ होतीं। बल्कि अफ़्रीक़ा में अभी भी कुछ क्षेत्रों में रिवाज है कि इन क्षेत्रों के चीफ़ों ने कई-कई पत्नियाँ रखी होती हैं। और जब वे अहमदी होते हैं तो कहते हैं कि अब हमें क्या करना चाहिए? फिर उन्हें बताया जाता है कि चार पत्नियाँ रखने के बाद बाक़ी को उत्तम रूप में हक़्क़-ए-ज़ौजीयत से आज़ाद कर देते हैं। अत: इस्लाम ने तो संख्या को महिदूद किया है और फिर उसके साथ कई शरायत भी लगाई हैं कि तुम इन्साफ़ करो। ये सबसे बड़ी शर्त है कि यदि एक से अधिक शादी करनी है तो प्रत्येक पत्नी के साथ इन्साफ़ करो। इस बात की आज्ञा नहीं कि किसी पत्नी को अलग थलक बेसहारा छोड़ दो।

इसी औरत ने दुबारा प्रश्न किया कि चार ही क्यों हैं? पाँच क्यों नहीं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यदि पाँच होतीं तो आपने कहना था कि पाँच ही क्यों, छ: क्यों नहीं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जंगों के हालात के अतिरिक्त यह भी सूरत होती है कि पहली पत्नी की औलाद नहीं है और पुरुष को औलाद की इच्छा है तो वह दूसरी शादी कर ले। कुछ महिलाए बीमार होती हैं और पुरुष की ज़रूरीयात पूरी नहीं होतीं तो इस सूरत में भी पुरुष दूसरी शादी कर सकता है। इसी तरह कुछ दूसरी ज़रूरतें भी पड़ती हैं जिस के लिए पुरुष को एक से अधिक शादी करनी पड़ती है। इसी तरह कुछ धार्मिक ज़रूरीयात के लिए भी कुछ लोगों को शादीयों की आवश्यकता पड़ती है। कुछ पुरुष ऐसे हैं जो समझते हैं कि हमारा एक पत्नी से गुज़ारा नहीं हो सकता। ऐसे पुरुष बजाय इस के कि इधर-उधर जाएं और ग़लत काम करें उन के लिए बेहतर है कि वह दूसरी शादी कर लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया घर में पाकीज़ा माहौल बनाना ज़रूरी है। यदि पुरुष का गुज़ारा नहीं होता तो बेहतर है कि माहौल की पाकीज़गी क़ायम रखने के लिए दूसरी शादी कर ले। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि यदि पुरुष को पता हो कि औरत के क्या हुक़ूक़ हैं और उनको अदा न करने पर उस को कितना गुनाह होगा तो शायद पुरुष एक भी शादी न करे। दो तीन तो दूर की बात है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम फ़ित्रत और वास्तव के क़रीब लाता है। यहां जो 65 या 75 प्रतिशत तलाक़ें होती हैं वह इसी कारण से होती हैं कि पुरुष और औरत में एक विशेष अरसा के बाद विश्वास नहीं रहता। आप बे-शक देख लें कि पुरुष कहीं न कहीं involve हुआ होता है। शायद कहीं औरत भी होती हो परन्तु उमूमन पुरुषों पर यही आरोप लगाते हैं और महिलाए इस के कारण से तलाक़ें लेती हैं। तो nature का एक क़ायदा क़ानून है इस के अनुसार न चलने से ये बुराईयां पैदा होती हैं। इस लिए इन बुराईयों से रोकने के लिए इस्लाम कहता है कि तुम शादियां कर लो। बजाय इस के कि आपस के विश्वास को भी ख़त्म करो। पहली पत्नी को विश्वास में लू और अपनी ज़रूरीयात पूरी करने के लिए दूसरी शादी करो या तीसरी शादी कर लो। बजाय इस के कि तुम अपनी पत्नी का विश्वास ख़त्म करो और गंदे कामों में ग्रस्त हो जाओ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बजाय इस के कि पहली पत्नी का विश्वास ख़त्म करो और गंदे कामों में ग्रस्त हो जाओ इस से बेहतर है कि दूसरी शादी कर लो ताकि पहली पत्नी का विश्वास भी क़ायम रहे।

इसी महिला ने प्रश्न किया कि यदि पुरुष में ऐसी रोग हूँ तो औरत क्या करे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यदि पुरुष में ऐसी कोई बीमारी है तो औरत खुला ले-ले और अलग-अलग हो जाए। इसी तरह यदि औरत यह नहीं चाहती कि पुरुष दूसरी शादी करे तो वह औरत खुला ले सकती है। यदि पुरुष को तलाक़ का हक़ है तो ऐसे हालात में जब औरत ख़ुश नहीं है तो उसको अपने पति से खुला लेने का हक़ है। वह पति से अलैहदगी इख़तियार कर सकती है। इस सूरत में पुरुष अपनी इस पत्नी को पूरे हुक़ूक़ के साथ विदा करेगा। और यदि इस पत्नी से औलाद हो तो औलाद के सब हुक़ूक़ शरीयत के अनुसार अदा करेगा।

एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि संसार में एक क़बीला ऐसा भी है जहां औरत को इख़तियार है कि वह एक से ज़्यादा मर्दों से शादियां कर सकती है और नसल को चलाती है। परन्तु फिर यह पता नहीं चलता कि बच्चा किस का है? उमूमन प्रत्येक सोसायटी में पुरुष से ही नसल चलती है इस लिए पुरुष तो चार शादियां कर सकता है और पुरुष की जो ज़रूरीयात हैं वह औरत की ज़रूरीयात से ज़्यादा हैं। इस लिए भी उस को आज्ञा मिल गई परन्तु यदि औरत एक से ज़्यादा शादियां करेगी तो पता नहीं चलेगा कि किस की नसल चल रही है।

इस मुलाक़ात के बाद दल के सदस्यों ने अपने विचारों का प्रकटन भी किया :

लाथोंविया से आने वाले एक वकील Mr Sarunas ने कहा : मैं यहां आपके जलसे में शामिल हो कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैंने आपके ख़लीफ़ा के भाषण सुने हैं। इस्लाम के बारे में यह मेरे लिए नया तजुर्बा है। यहां आकर मुझे इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा का ज्ञान हुआ है। मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ और एक वकील होने की हैसियत से अब मैं लाथोंविया में आपकी की Activities में क़ानूनी तौर पर पूरी सहायता और प्रयास करूँगा और आपका साथ दूँगा।

इसी तरह एक यूनीवर्सिटी के विद्यार्थी Mr.Artur कहने लगे, मुझे आप लोगों

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 10 JUNE 2021 Issue No.23

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

के कारण से ही इस्लाम की वास्तविकता का पता चला। यहां आकर ख़लीफ़ाउल-मसीह के भाषण सुनकर इस बात का भी अनुमान हुआ कि दहशतगर्दी कुछ इंतिहा-ए-पसंद लोग करते हैं जिसका हक़ीक़ी इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस से पूर्व भी मैं जलसा में शामिल हुआ हूँ। आप लोगों के माध्यम से ही मुझे इस्लाम की वास्तविकता का पता चला। यहांआकर इस बात का भी अनुमान हुआ कि दहशतगर्दी कुछ इंतिहा-ए-पसंद लोग करते हैं जिनका हक़ीक़ी इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं। अहमदी लोग मेहमानों को अपने से भी ज़्यादा एहमीयत देते हैं और उनकी छोटी से छोटी ज़रूरीयात का भी ख्याल करते हैं।

एक और विद्यार्थी Mr.Edgaras जो इस जलसा में शामिल थे वह कहने लगे

यहां आने से पूर्व मेरे ज़हन में इलैक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम इस्लाम के बारे में बहुत ग़लत कल्पना क़ायम थी। ख़लीफतुल मसीह के भाषण सुनकर और जलसे के प्रोग्राम देखकर सब कुछ विभिन्न लगा। लोगों का रवैय्या बहुत सकारात्मक था और आज हक़ीक़ी इस्लाम को आप लोगों में देखा है।

एक विद्यार्थी इलम Miss Viktorija ने भी इसी तरह की भावनाओ का प्रकटन किया।

यहां आकर ख़लीफतुल मसीह के भाषण सुनकर हक़ीक़ी इस्लाम का पता चला है और इस्लाम के बारे में हमारे विचारों तबदील हो गए हैं। इस्लाम तो एक शांति प्रिये धर्म है। अहमदी लोग मुत्तहिद नज़र आते हैं। जलसे से पूर्व मुझे इस्लाम के बारे में नहीं पता था। पर आज स्वयं शामिल हो कर बहुत कुछ देखने को मिला। आप लोग बहुत मिलनसार हैं।

लाथान्विया से दो मेहमान महिलाएं Jurjita साहिबा और Deimante साहिबा आई थीं। ये महिलाएं एक बिज़नस स्कूल की टीचर हैं। उन्होंने कहा :

हुज़ूर अनवर बहुत अच्छे इन्सान मालूम होते हैं। आपसे मुलाक़ात भी हुई जिसमें विभिन्न चीज़ों के बारे में बात हुई और आपने विभिन्न प्रशनों के उत्तर दिए जैसे इस्लाम में चार पत्नीयों के प्रश्न इत्यादि। आपका मज़ाह बहुत ख़ूब है। आपके उत्तर बड़े माक़ूल थे और दिल पर प्रभाव करने वाले थे। जमाअत की शिक्षा मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं बहुत उत्कृष्ट शिक्षा है क्योंकि अच्छी बात अच्छाई को ही खींचती है। यहां का प्रबन्ध बहुत अच्छा था लोग बहुत अच्छे हैं। प्रत्येक चीज़ मुनज़्ज़म है। हमें इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा का यहां आकर ही पता चला है। हमारी प्रत्येक तरह से मेहमान-नवाज़ी की गई। प्रत्येक किस्म की ज़रूरीयात का ख्याल रखा गया। यदि किसी चीज़ के बारे में सोचा भी तो मांगने से पहले वह चीज़ प्रदान कर दी गई और इस किस्म की आला मेहमान-नवाज़ी पर हम शुक्रगुज़ार हैं।

इसी तरह अंग्रेज़ी भाषा के एक टीचर Mr Makaris Savlys ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा :

जलसे में शमूलीयत से पूर्व इस्लाम बहुत सख़्त धर्म लगता था। जलसे के पहले दिन ही इस प्रकार महसूस हुआ जैसे इस्लाम बहुत ही अच्छा धर्म है। मीडिया में इस्लाम की ग़लत तस्वीर प्रस्तुत की जाती है। आपके ख़लीफ़ा ने इस्लाम की हक़ीक़ी तस्वीर प्रस्तुत की तो मुझे समझ आया कि इस्लाम प्रत्येक किस्म की दहशतगर्दी को ख़त्म करता है। आपके ख़लीफ़ा अस्र-ए-हाज़िर के समस्याओं पर ख़ूब नज़र रखते हैं और उन पर बात भी करते हैं। जिहाद का सही अर्थ हमें यहां आकर ही समझ आया। दूसरे मुस्लमान जिहाद की ग़लत तशरीह करते हैं। यहां आकर हमने बहुत कुछ सीखा है।

लाथान्विया के दल की यह मुलाक़ात नौ बजकर बीस मिनट तक जारी रही। अंत में दल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक दल के सदस्यों को हाथ मिलाने का सौभाग्य बख़्शा और प्रत्येक को क़लम भी अता फ़रमाया :

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ समय के लिए अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नौ बजकर 50 मिनट पर मर्दाना जलसा गाह में पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलअपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

उस समय मुझे प्राप्त होता है मैं उस की अवस्था वर्णन नहीं कर सकता और वह हालत बहुत ही ज़्यादा आन्नद प्रदान करने वाली और सन्तोष देने वाली होती है इस की तुलना में के मेरा सन्दूक़ भरा हुआ हो।''और फ़रमाया

"इन दिनों में जबकि सांसारिक मुक़द्दमों की कारण से पिता जी और भाई साहिब तरह तरह के दुखों में पड़े रहते थे वे कई बार मेरी हालत देखकर रश्क खाते और फ़रमाते थे कि यह बड़ा ही ख़ुशनसीब आदमी है। इसके निकट कोई ग़म नहीं आता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

पालन पोषण करती है। यदि वे बाल बच्चों की हिफ़ाज़त न करे तो मुबल्लिग़ को तब्लीग़ के लिए जाने में बड़ी दिक़्क़त होगी। इसी तरह यदि माता-पिता ने अच्छी तरह तर्बीयत नहीं की हुई हो तो वह किस तरह दीन के कामों में हिस्सा ले सकेगा। या यदि औलाद माता-पिता को मुतमइन न बैठने दे तो वह किस तरह नेकियों में हिस्सा ले सकते हैं। अत: चूँकि इन्सान नेकियों में तरक़्क़ी अपने रिश्तेदारों की मदद से करता है उसके इनाम में उनका हिस्सा रखा और यह क़ानून मुक़र्रर किया कि सब ख़ानदान में जो सबसे आला स्थान को हासिल करे दूसरे सब उसके पास ही रखे जाएं न कि अपने छोटे स्थानों पर इस शर्त के साथ कि वह निजात याफताह हों।

ज़ौज का शब्द जो इस आयत में इस्तिमाल हुआ है मेरे नज़दीक उसके यहां जोड़े के अर्थ हैं अर्थात साथी के न कि मर्द औरत के और मेरे नज़दीक इस में समस्त वे लोग शामिल हैं जो नेकियों में उसके सहायक और मददगार हुए हों न कि केवल मियां और बीवी। इस से औरतों के सम्बन्ध में भी सवाल हल हो जाता है कि वे नबुव्वत के स्थान पर क्यों नहीं पहुंचाई जातीं क्योंकि इस आयत से निकलता है कि नबी की पत्नियों को भी उस स्थान पर रखा जाएगा जिस स्थान पर नबी होंगे अर्थात जबकि उनकी बनावट के लिहाज़ से उनको दुनिया में नबी नहीं बनाया जाता लेकिन वे उन्ही इनामात में शरीक होंगी जो अम्बिया को मिलेंगे। अब देखो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो एक व्यक्ति हैं परन्तु औरतें ग्यारह उनके साथ उनके इनामात में शरीक होंगी। इसी तरह नबी का ज़ौज सिद्दीक़ होता है और औरतों को सिद्दीक़ के दर्जा पाने से रोका नहीं गया। अब जो औरतें सिद्दीक़ीयत के स्थान पर पहुंच जाएं वे भी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंचाई जाएँगी जिस तरह समस्त सिद्दीक़ पहुंचाए जाऐंगे क्योंकि वह मर्तबा सिद्दीक़ीयत के लिहाज़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथियों में शामिल होंगी।

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ से यह बताना मतलूब नहीं कि जन्नत बड़ा स्थान है और इस के बहुत से दरवाज़े हैं बल्कि यह अर्थ है कि वे अख़लाक़ हसना और नेकियां कि जिनकी वजह से वे जन्नत में दाख़िल होंगे वे इस जहान में जन्नत के दरवाज़ों की शक्ल में नक़ल करने वालीं होंगी।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 412 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad